साकार संग के अमूल्य क्षण

(चित्रमय)

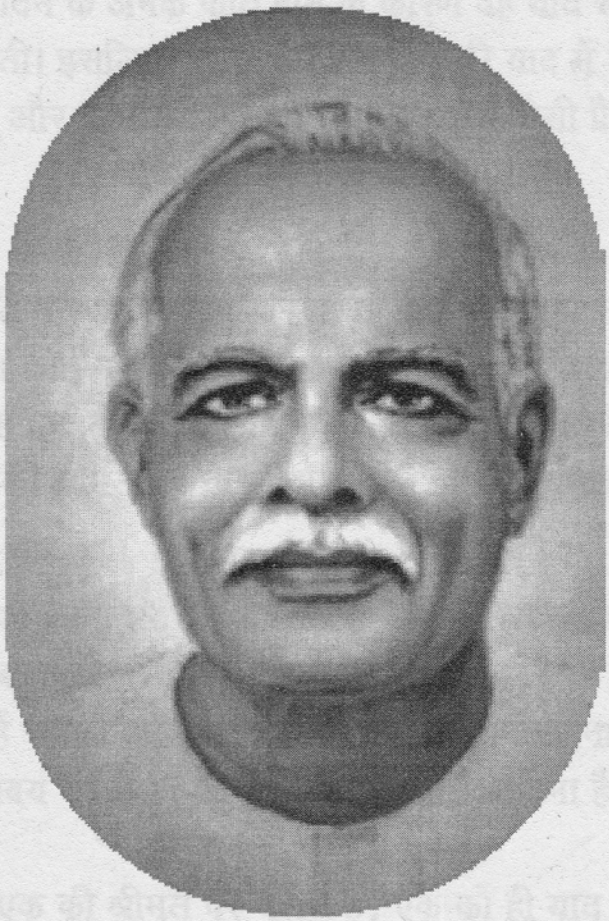

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय

पाण्डव भवन, आबू पर्वत, राजस्थान, भारत

मीठे बच्चे!

तुम कर्मयोगी हो। तुम्हें खाते-पीते, धन्धाधोरी करते भी याद में रहना है। लेकिन, दिन के अनेक कार्य होने के कारण वह याद स्थाई नहीं रह सकती। इसलिए, अमृतवेले उठ बाप की याद में बैठो।

मैं आत्मा हूँ और परमात्मा पिता की सन्तान हूँ— ऐसी प्रैक्टिस करो। इसी को सहज राजयोग कहा जाता है।

प्यारे बच्चे,

देहधारी मनुष्यों को याद करना यह कोई राजयोग नहीं है, भगवान कोई मनुष्य नहीं। भगवान सबका एक निराकार है, वह एक बार ही आकर बच्चों को योग सिखाते हैं। उनकी श्रीमत पर चलने वाले बच्चे ही श्रेष्ठ बनते हैं।

लाडले बच्चे,

तुमको रहमदिल बन अब सबके ऊपर तरस खाना है। सब बेचारे दुःखी हो भगवान बाप को पुकार रहे हैं। तुम्हें सबको अविनाशी ज्ञान-रत्नों का दान करना है। स्वयं का, बाप का और घर का परिचय देना है।

तुम सबको सन्देश दो—

हम सब एक की श्रीमत पर चलते हैं, एक को ही याद करते हैं। उस एक निराकार परमात्मा की याद से हम पावन बनते, तुम भी उसे ही याद करो।

मध्यम वर्ग के घराने में जन्में दादा लेखराज ने
जन्म से लेकर ही अपनी व्यवहार कुशलता, व्यापार चातुर्य,
ईमानदारी तथा अथक परिश्रम से गिने-चुने तथा जाने-माने लोगों में
अपना स्थान बना लिया था।
ऐसा व्यक्ति संसार में कोई विरला ही होता है,
जिससे अपने कुटुम्ब, पड़ोसी, मित्र-गण
तथा
व्यापार के कारण सम्पर्क में आने वाले सभी लोग सन्तुष्ट हों।

"होनहार विरवान के होत चिकने पात..."

दादा लेखराज हीरे- जवाहरात के एक कुशल व्यापारी थे,
जिनकी ज्वेलरी राजा- महाराजाओं में भी प्रसिद्ध थी।

फोटो– **1920**

दादा लेखराज बाल्यकाल से ही श्री नारायण के अनन्य भक्त थे।
वे अपने पूजा-पाठ के कक्ष के अतिरिक्त
अपने शयनागार व सिरहाने के नीचे भी श्री नारायण का चित्र रखते थे।
इतना ही नहीं, वे तिजोरी तथा जेब में भी श्री नारायण का चित्र
रख थे ताकि दिन भर जिधर भी देखें या जहाँ भी हाथ पड़े वहीं
श्री नारायण उनके सामने आ जायें।
ऐसी थी उनकी अटूट भक्ति।

"आदर्श लौकिक जीवन"

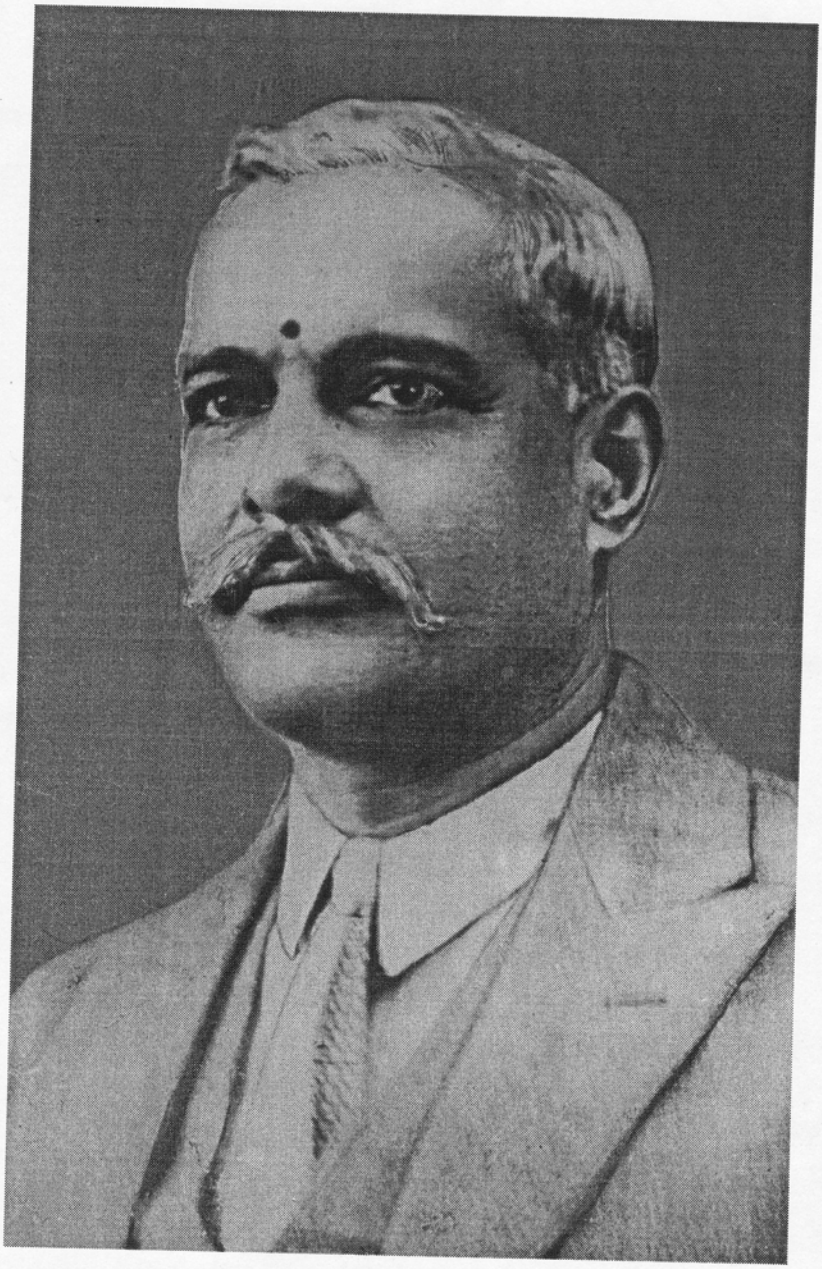

दादा लेखराज व्यापार के साथ भक्ति में भी अग्रणी थे।
वे सदा गुरु की आज्ञा को हृदय से मानते थे।

फोटो– 1930

दादा लेखराज का जन्म 1876 में सिन्ध (वर्तमान समय पाकिसथान) के
एक कृपलानी कुल में वल्लभचारी भक्त के यहाँ हुआ था।
उनके पिता एक स्कूल में प्रधानाध्यापक थे।
दादा के परिवार में दो पुत्र और तीन पुत्रियाँ थीं।
उनका पूरा परिवार शान्त, सुखी, समृद्ध एवं सदाचारी था।

''सम्बन्ध अविनाशी और रूहानी होते हैं''

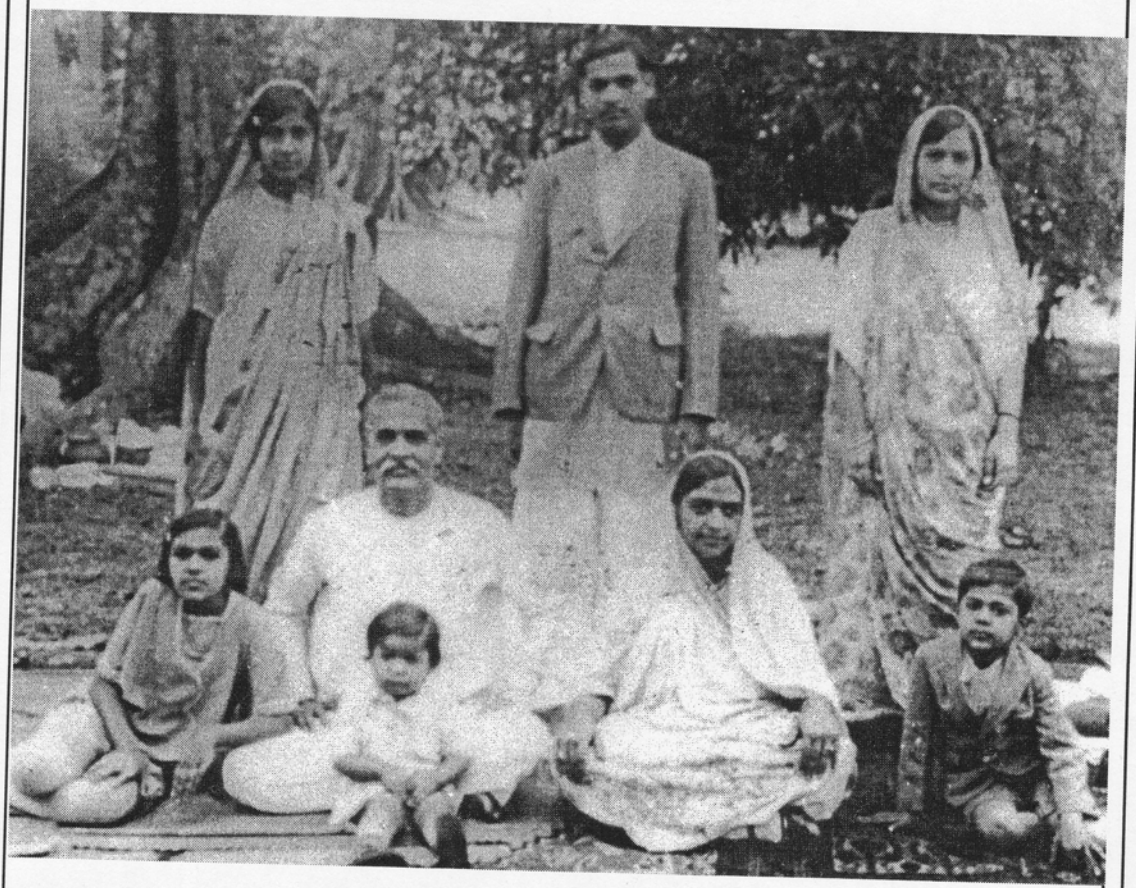

दादा का सुखी परिवार– दादा लेखराज जी, साथ में उनकी धर्मपत्नी यशोदा जी, (पीछे खड़े हैं बायें से दायें) दादा की सुपुत्री दादी निर्मलशान्ता, दादा के ज्येष्ठ सुपुत्र किशनचन्द, पुत्रवधु राधिका (दादी बृजइन्द्रा)।

(नीचे बैठे हुए)
दादा की सुपुत्री बहन पुट्टु, छोटी पुत्री सूर्य, पुत्र नारायण भाई।

फोटो– 1930

हैदराबाद से स्थानान्तरित होने के बाद
सभी इसी भवन में
'ॐ' के अर्थ स्वरूप में स्थित होने की शिक्षा लेते थे।
यहाँ ही 'ॐ बाबा' भी रहते थे। इसलिए इस भवन का नाम
'ॐ निवास' हुआ।
यह काफी बड़ा भवन था।

'ॐ' की ध्वनि मुखरित करता, इतिहास रचता— कराची का यह 'ॐ निवास'

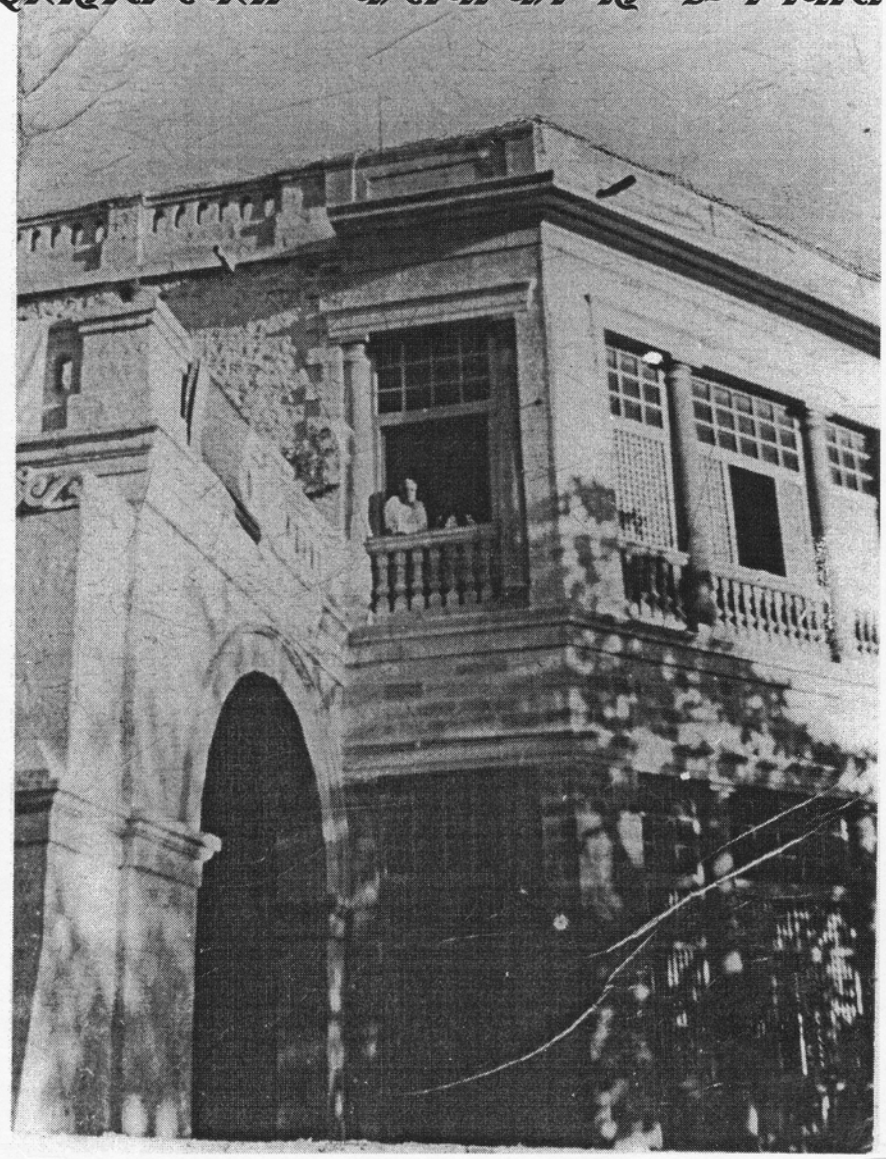

हरेक महान कार्यों की शुरुआत अत्यन्त छोटी होती है।
कराची में 'ॐ निवास' से प्रारम्भ हुआ ईश्वरीय विश्व विद्यालय
आज पूरे विश्व में विशाल वट वृक्ष बन कर मानवता की सेवा कर रहा है।

फोटो- १९३९

कराची का ऐतिहासिक 'राधा भवन'

जहाँ ओम् राधे अथवा जगदम्बा सरस्वती ने ज्ञानवीणा बजा कर

कितने ही मानव-हृदयों को आत्मिक सुख दिया

और

उनका दिव्य विवेक भी जागृत किया!

'राधा भवन'

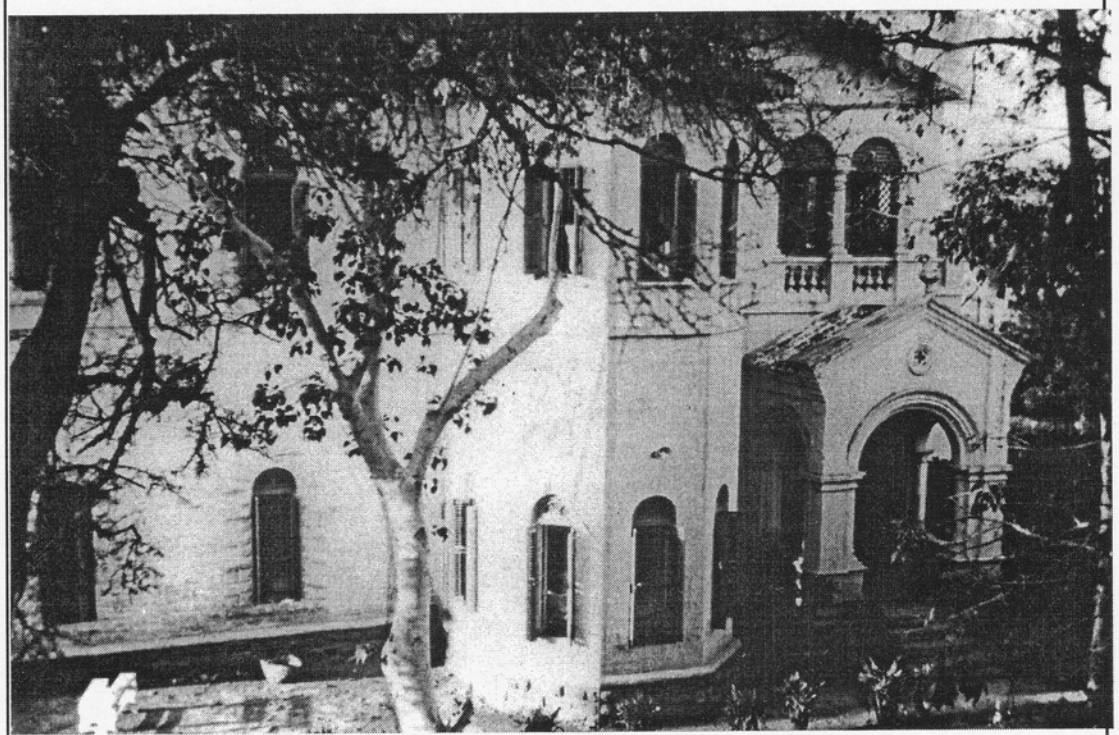

'राधा भवन'
जहाँ 'ॐ राधे जगदम्बा सरस्वती' ब्रह्मा- वत्सों के साथ रहा करती थीं।

1940

50 1-26

''नर के मन में कुछ और, साहब के मन में और ....।''

अनायास ही ईश्वरीय साक्षात्कार से

दादा की मनोवृत्ति इस संसार से उपराम हो गयी।

उन्हें अन्तर्मुखता का अनुभव होने लगा।

अब उन्हें एकान्त ही प्रिय लगने लगा

तथा

वे मनन-चिन्तन में रहने लगे।

क्रमश: दिव्य साक्षात्कारों ने उन्हें अलौकिक जन्म दिया।

उनको परमात्मा शिव ने नाम दिया— 'प्रजापिता ब्रह्मा'।

"लगी लगन बस यही...
हमें तपस्या करना है..."

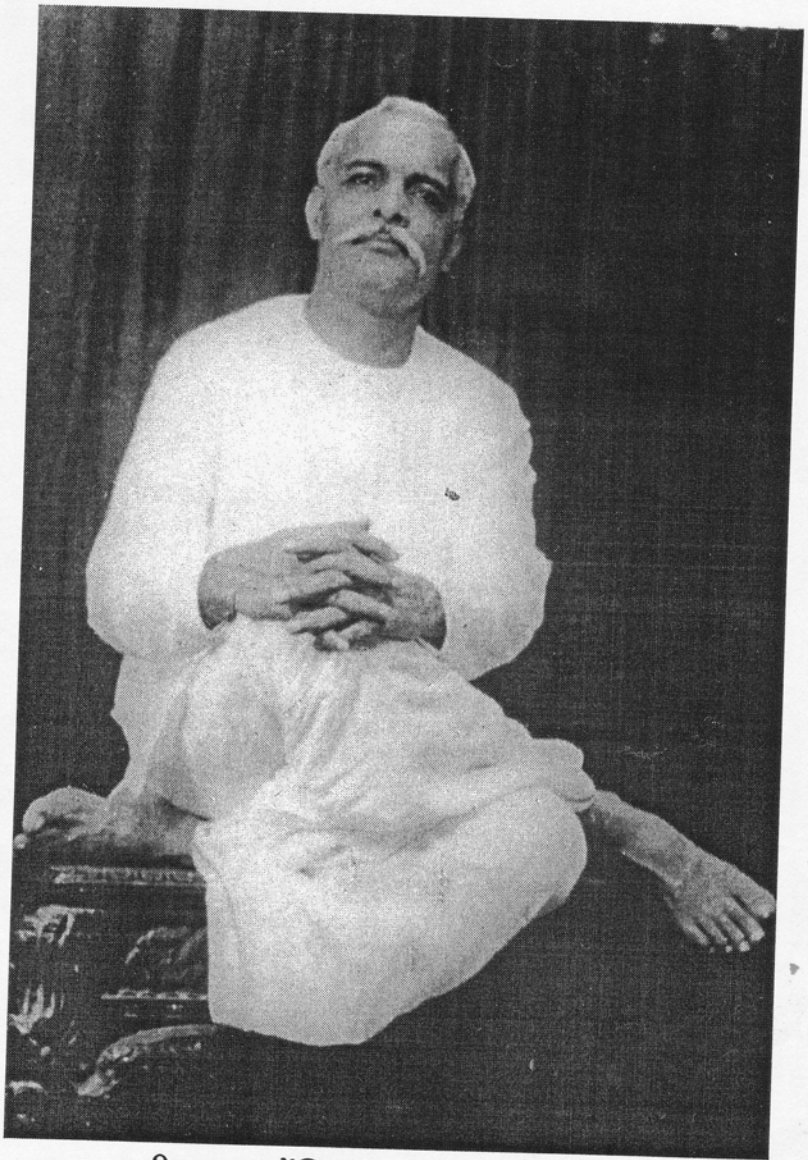

कराची- दादा में शिव बाबा की प्रवेशता के बाद
परमात्मा शिव ने उन्हें 'प्रजापिता ब्रह्मा' की उपाधि दी।
ब्रह्मा बाबा परमात्मा शिव की स्मृति की मग्न अवस्था में।

फोटो- ~~1948~~ 1937 (क)

बच्चे ही भावी विश्व के कर्णधार हैं।

इसलिए ही तो पिताश्री ब्रह्मा ने उनमें दिव्य एवं अलौकिक संस्कार कूट-कूट कर भर दिये।

यही बच्चे आगे चल कर विश्व के आधार और उद्धार मूर्त बने

और

विश्व-कल्याण के महान कार्य में लग गये।

''हम संसार की नैया को पार लगा देंगे''

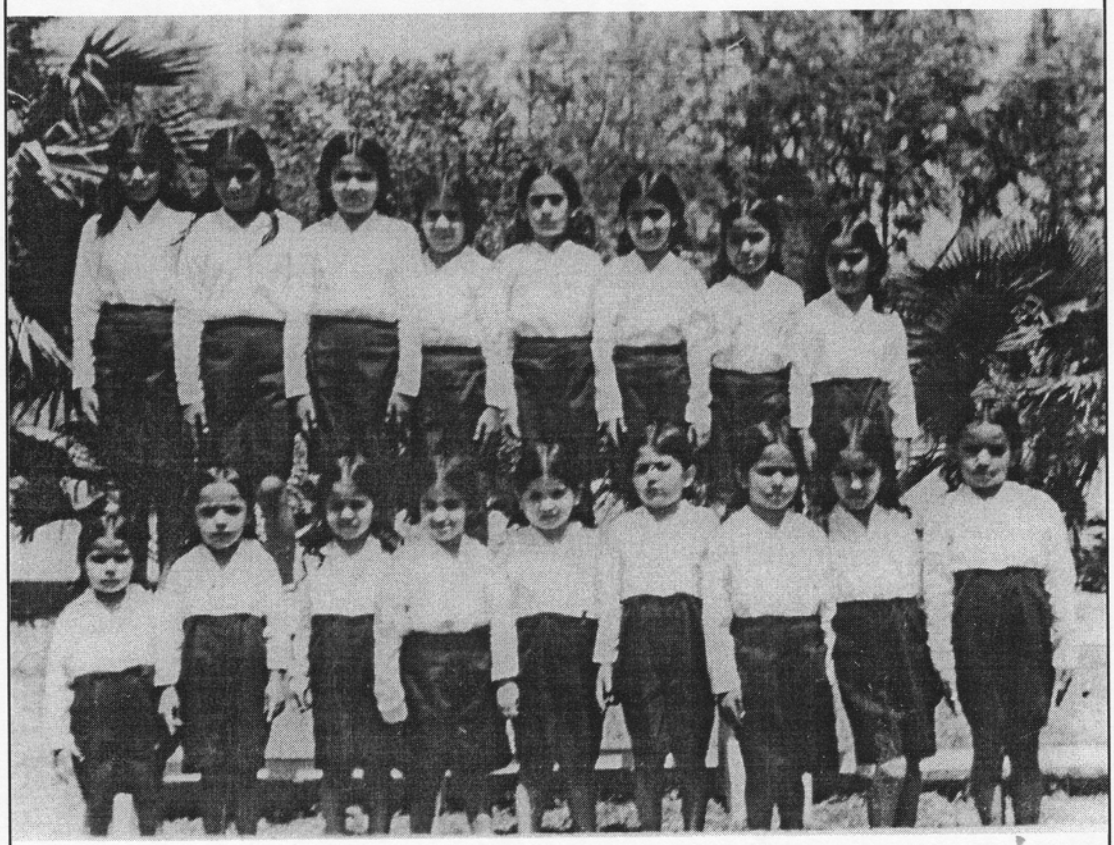

कराची — क्लिफ्टन के बगीचे में बच्चों का समूह अलौकिक मस्ती में।

फोटो– 1939

सन् 1937 के दीपावली का वह शुभ दिवस
जब औपचारिक रूप से ईश्वरीय सेवा में ये बहनें पूर्णत: समर्पित हुईं।
लगभग 14-15 वर्ष की अल्पायु से लेकर आज तक
वे आध्यात्मिक जगत् के लिए
प्रकाश स्तम्भ और मार्गदर्शक बन चुकी हैं।

"त्याग, तपस्या और समर्पण— परमात्म-स्नेह का आधार"

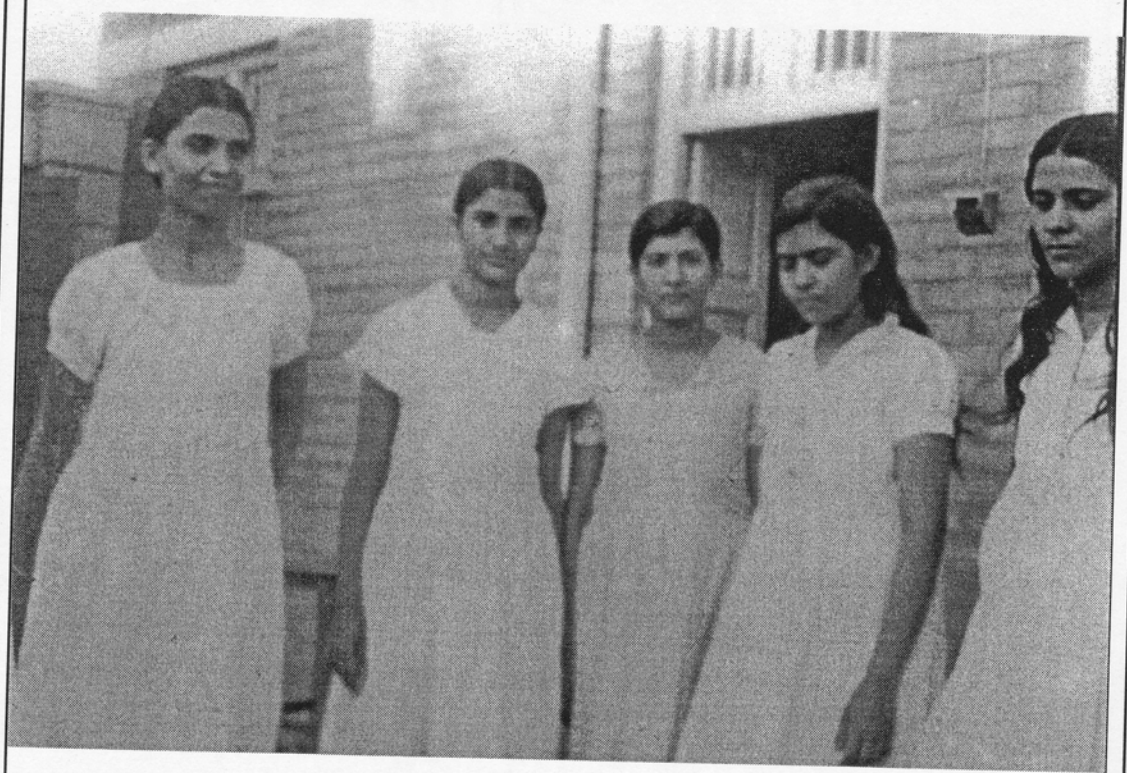

[हैदराबाद] ~~करांची~~— ओम् निवास में अपने जीवन को
ईश्वरीय सेवार्थ समर्पित करने वाली प्रथम पाँच बहनें।
(बायें से दायें) बहन मिट्ठू जी, दादी प्रकाशमणि जी, दादी शान्तामणि जी, बहन कला जी, बहन शीतलमणि जी।

फोटो– 1939 (B)

पेज नं. 15, 13, 9, 17, 19, 21, 23 की
फोटोज को सन् के हिसाब से क्रमवार रखा जाए तो अच्छा रहेगा।

सत्य, धर्म, न्याय और पवित्रता की राह पर चलने वाले प्रभु-प्रेमी लोग
ईश्वरीय मस्ती में उत्तरोत्तर आगे बढ़ रहे थे।
तभी एक दिन पंचायत के मुखी लोगों ने उपद्रवी लोगों के साथ
ओम् निवास के बाहर पिकेटिंग कर दी।
क्योंकि वे अपनी पत्नियों से
काम-विकार के लिए आग्रह कर रहे थे और अपने मित्र-सम्बन्धियों को
ज्ञानामृत पीने से मना करने की जिद्द पर तुले थे।

''धरत परिये, धरम नहीं छोड़िये''

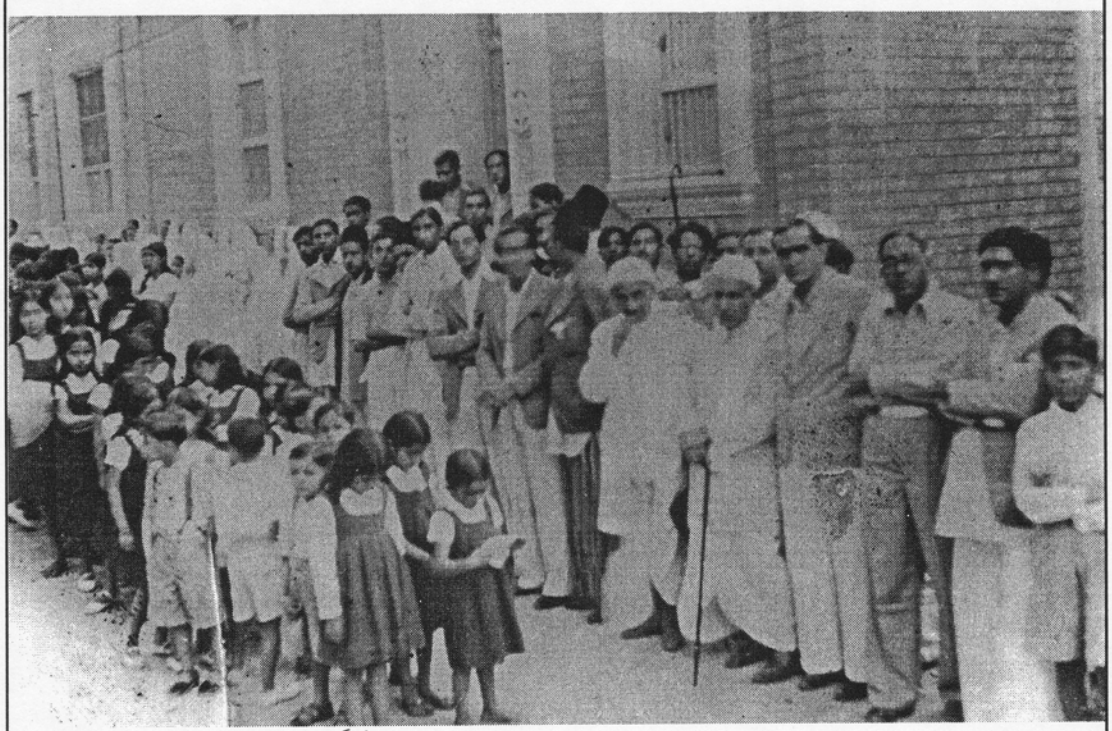

हैदराबाद- ओम् निवास के सामने सिन्ध के गणमान्य व्यक्ति, मुखिया, चौधरी और अन्य लोग धर्म के विरुद्ध पिकेटिंग में खड़े हैं।
सत्य तथा धर्म पर अटूट विश्वास रखने वाले
ओम् मंडली के छोटे- छोटे बच्चों को अन्दर नहीं जाने दिया।
सभी बच्चे एक सत्य पिता परमात्मा की याद में शान्ति से खड़े हैं।

फोटो— 1937

Be Holy ❖❖ OM SHANTI ❖❖ Be Yogi

Date

ईश्वरीय यज्ञ में उपद्रवियों द्वारा उपद्रव भी किये गये और उच्च अधिकारियों द्वारा दबाव डालने का प्रयास भी ~~किया गया~~। वस्तुस्थिति की जानकारी लेने हेतु तत्कालीन कलेक्टर ने पिताश्री को आमन्त्रित किया। पिताश्री ने ~~स्पष्ट श~~ ईश्वरीय योजना के बारे में स्पष्ट शब्दों में बताया — ~~हमें~~ किसी भी व्यक्ति को हम ~~ज्ञानामृत~~ हठात् ज्ञानामृत पीने के लिए न तो बुलाते हैं और न ही ~~अ~~ किसी को मना ही करते हैं क्योंकि ईश्वरीय ज्ञानामृत पान करने का हरेक का नैतिक अधिकार है।

इसपर कलेक्टर ने ~~आदेश दि~~ ~~उपद्रवियों~~ विरोधियों को हंगामा न करने की दृढ़ता से चेतावनी दी।

"विघ्नों से कभी ना घबराना"

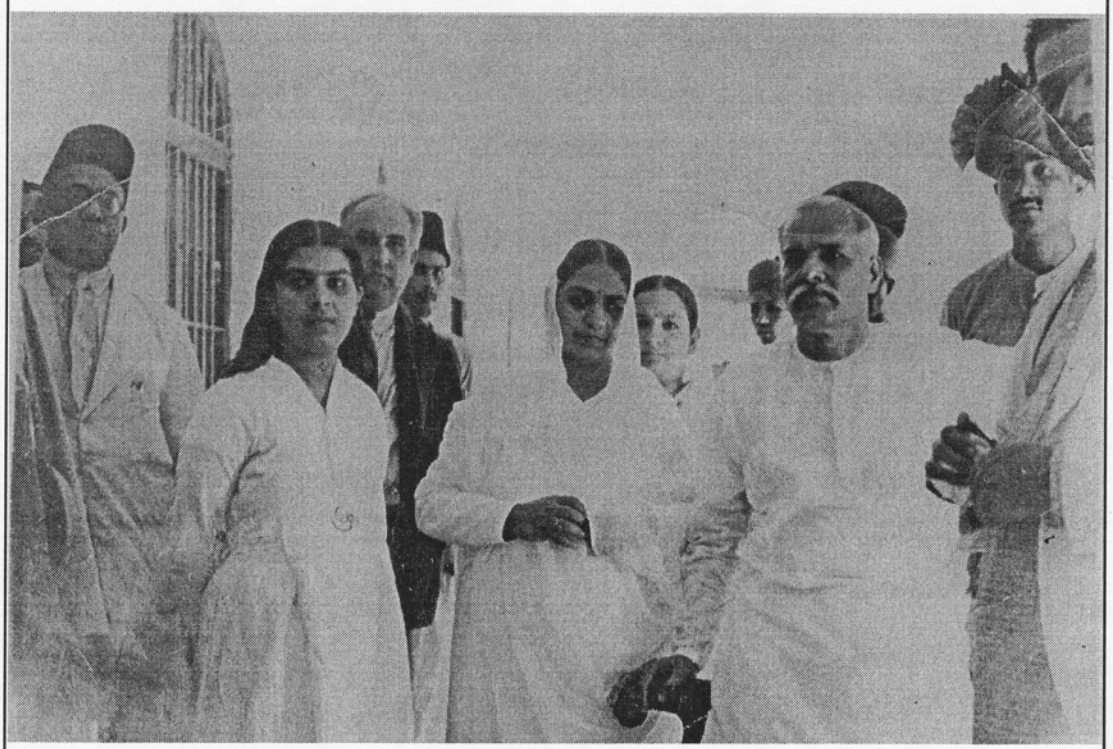

हैदराबाद ~~कराची~~ - कलेक्टर के ऑफिस में बाबा।
साथ में उनकी धर्मपत्नी यशोदा जी, दादी बृजइन्द्रा जी,
ओम् राधे जी (मातेश्वरी जी),
आत्मा राम अडवानी और अन्य भाई।

फोटो— ~~1938~~ 1937 (1)

लौकिक विद्या और अलौकिक विद्या का अद्‌भुत समन्वय
देखने को मिला जब हैदराबाद में स्थित ओम् निवास में बच्चे
ओम् की धुन के साथ ध्यानावस्था में चले जाते थे।
उनके लिए ज्ञानयुक्त वर्णमाला बनाई गई थी।
उन्हें 'आ' से आम के साथ-साथ 'आ' से 'आत्मा', 'प' से 'परमात्मा'
का पाठ पढ़ाया जाता था। उनके खान-पान व रहन-सहन का तरीक़ा भी
ऐसा था जिससे शुरू से ही उनके संस्कार दिव्य बन गये।

"लौकिक के साथ अलौकिक शिक्षा"

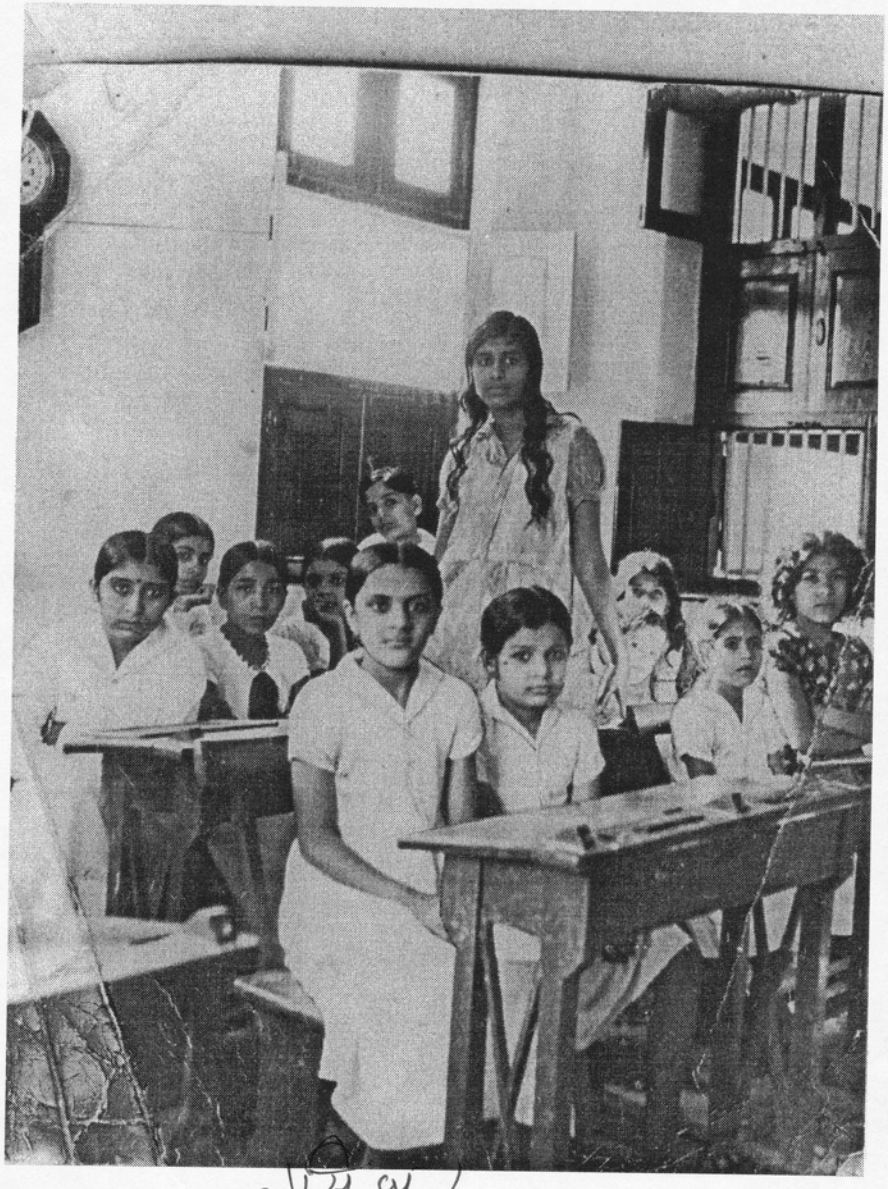

हैदराबाद - बाबा ने बच्चों का बोर्डिंग स्कूल खोला।
शिक्षिका दादी चन्द्रमणि जी बच्चों को पढ़ाते हुए।

फोटो—1937

शिव-शक्तियों की आध्यात्मिक सेना
विश्व का कल्याण करने एवं सबको बुराइयों से मुक्त करने के लिए
कृत-संकल्प थी। समुद्र तट पर स्थित क्लिफ्टन पर प्रायः
पिताश्री के साथ वे तन-मन के व्यायाम के लिए
जाया करती थीं।

''बच्चों के प्यारे बाबा''

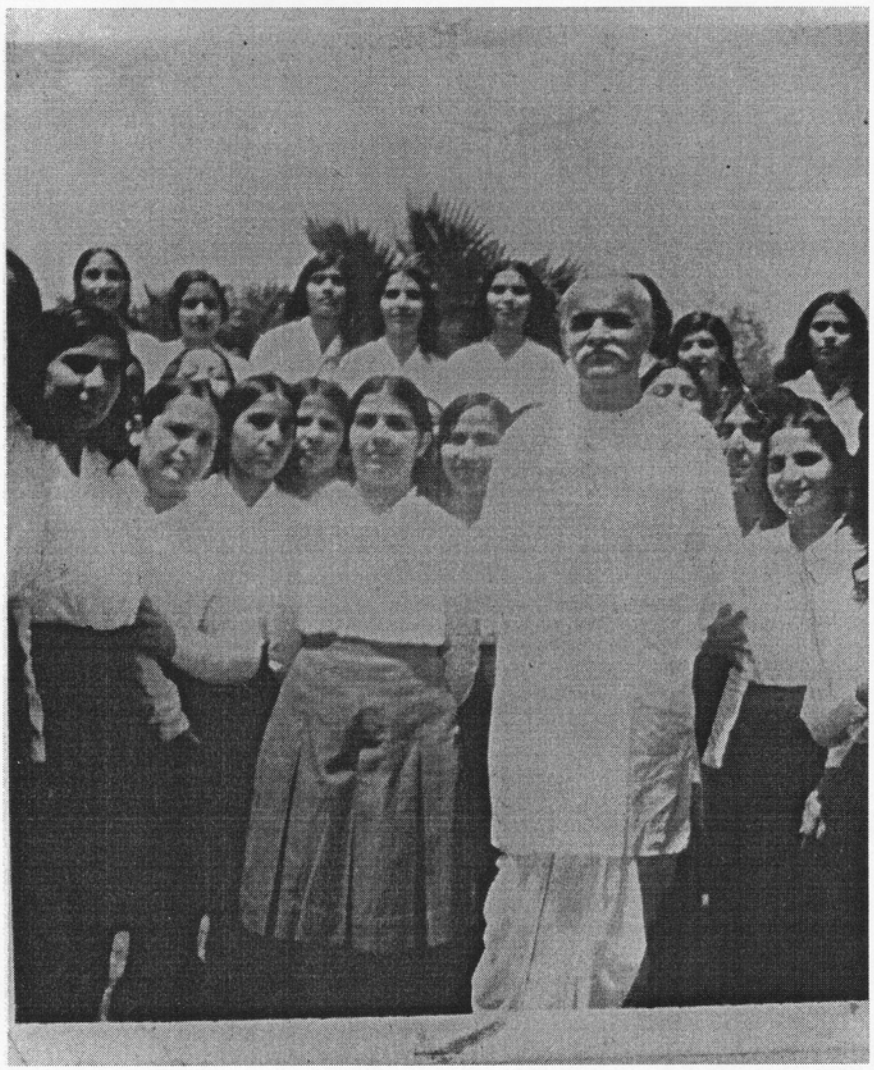

कराची– क्लिफ्टन पर बाबा एवं ममा के साथ (बायें से दायें) बहन जस्सु जी, दादी बृजइन्द्रा जी, बहन किशनी, बहन गोपी, मातेश्वरी जी, दीदी मनमोहिनी जी, दादी हृदयपुष्पा जी, दादी सन्तरी जी। पीछे की पंक्ति में (बायें से दायें) दादी सती जी, बहन ढिमलू जी, दादी चन्द्रमणि जी, दादी निर्मलशान्ता जी, दादी मिट्ठू जी, दादी शान्तामणि जी, दादी शीतलमणि जी।

फोटो— 1940

यही वो शिव-शक्तियाँ हैं
जिन्हें 'भारत माता शिव-शक्ति अवतार' से
सारा संसार सम्बोधित करता है।
वे आज ज्ञान-गंगायें बन विश्व में फैल कर
ज्ञानामृत से जन-जन की प्यास बुझा रही हैं।

''धरती पे शिव-शक्तियाँ आ गयीं''

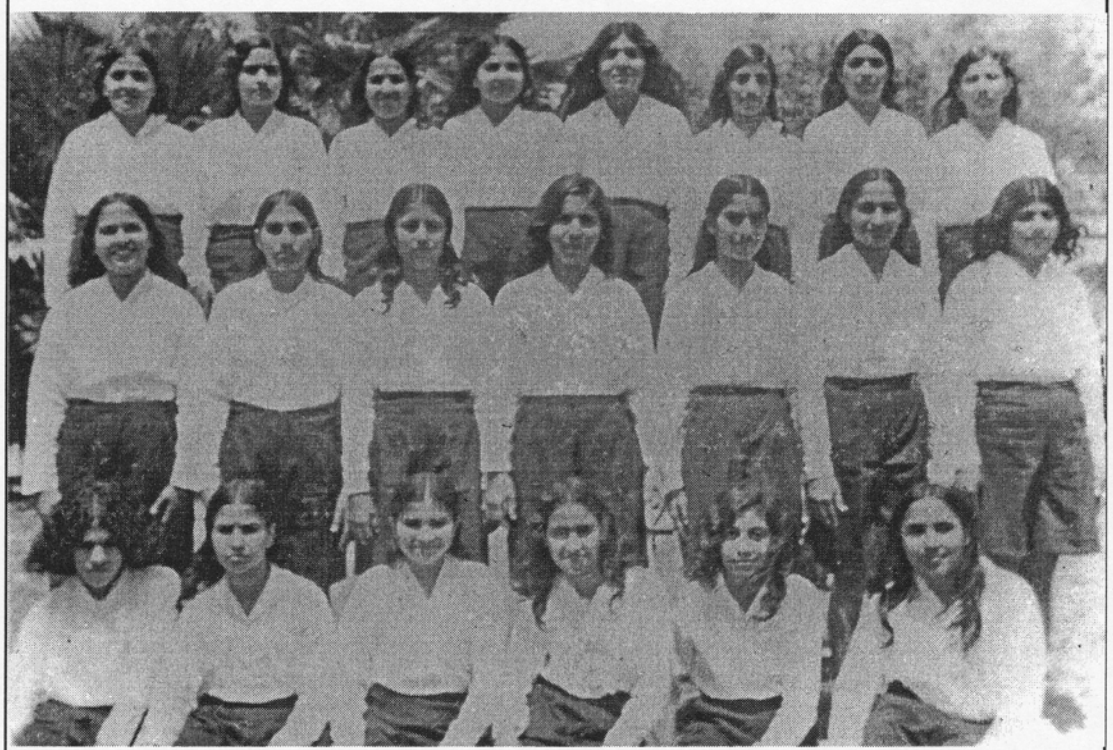

कराची— कुंज भवन में (बायें से दायें प्रथम पंक्ति में नीचे से)
बहन सरला जी, बहन रुक्मणी जी, बहन देवी शब्ज जी, बहन जशोदा जी,
बहन सन्देशी जी, बहन लीला जी। (द्वितीय पंक्ति में) बहन सती भोली जी,
बहन सुन्दरी जी, बहन आत्ममोहिनी जी, बहन सावित्री जी,
दादी मनोहर इन्द्रा जी, बहन गुल गोपी जी, बहन लक्ष्मी जी।
(तृतीय पंक्ति में) बहन किकनी जी (ममा को ज्ञान देने वाली), बहन ढीमलू जी,
बहन गोपी ढीम्बी जी, बहन धनी जी, दादी टिक्कन (हृदयपुष्पा) जी,
बहन भगवती जी बड़ी, बहन सती के जी तथा बहन रुक्मणी जी।

फोटो— 1940

आत्म-चिन्तन अथवा शान्ति-समाधि के लिए
पिताश्री यज्ञ-वत्सों को प्राय: घुमाने के लिए ले जाया करते थे।
बाबा कहा करते थे एक परमात्मा की याद में टिकना ही 'एकान्त' है।
इस प्रकार से आत्मोन्नति के साथ
'एकान्त' का भी आनन्द उन्हें मिलता था।

"हरेक सूर्यास्त के बाद स्वर्णिम ~~नव प्रभात आता है~~"

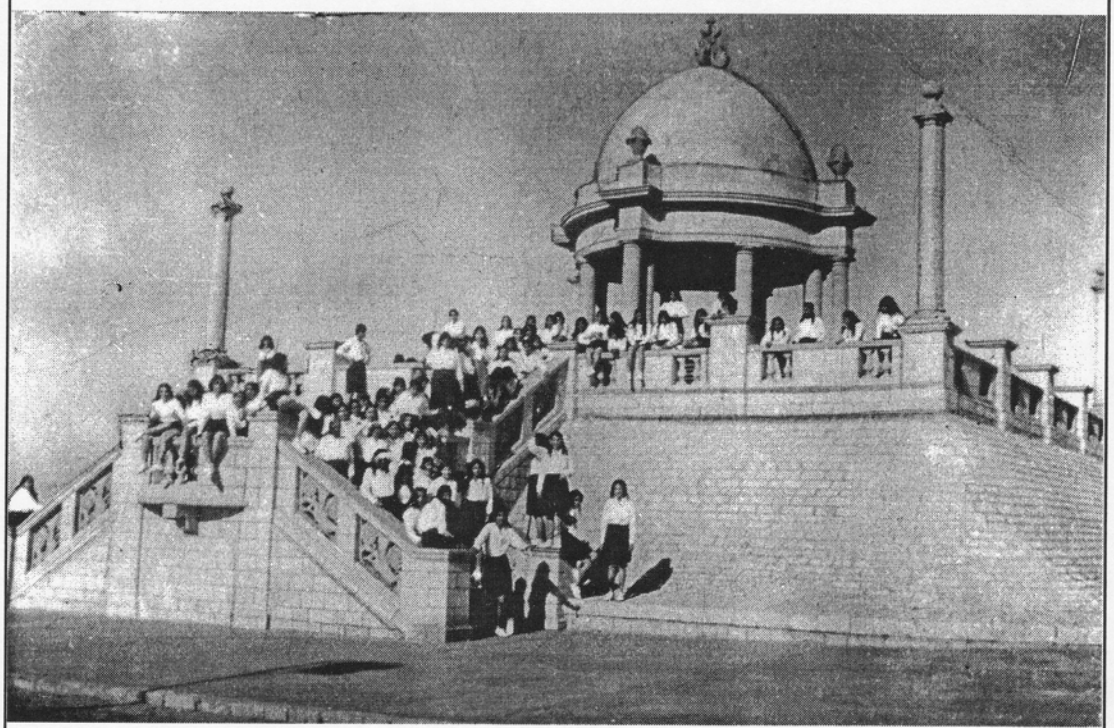

कराची— क्लिफ्टन पर नुमा- शाम के समय
यज्ञ- वत्स ध्यान के लिए बाबा के साथ जाया करते थे।

फोटो- 1940

आख़िर वह भी घड़ी आई जब कल्प पूर्ववत्
भारतवर्ष की आदि शक्तियाँ पुनः भारतवर्ष आ गईं।
क्योंकि शिव परमात्मा का उन्हें यह आदेश मिला था कि
भारत में जाना है और वहाँ से सारे विश्व का कल्याण करना है।

''सदा एवर रेडी''

कराची— 30 अप्रैल, 1950 को भारत आने की तैयारी में सारा सामान तैयार करके कुछ बहनें बैठी हैं। (बायें से दायें) दादी ईश्वू जी, दादी आत्ममोहिनी जी, दादी शील इन्द्रा जी, बहन मीरा जी (हरदेवी बहन की पुत्री), बहन हूरी जी, बहन आनन्दी जी, बहन पार्वती जी (ममा की बहन), ध्यानी दादी, जानकी दादी।

30 Apr (1950)

विदाई की बेला— पाकिस्तान से भारत के लिए
प्रस्थान करने की तैयारी।
स्थानीय जनता भी इस विदाई को अश्रुपूरित नेत्रों से निहारती हुई।
वास्तव में वे यज्ञ-वत्सों के प्रेमपूर्ण व्यवहार से अभिभूत होकर
बहुत ही आत्मीय हो गये थे।

''नाव चली उस पार रे...''

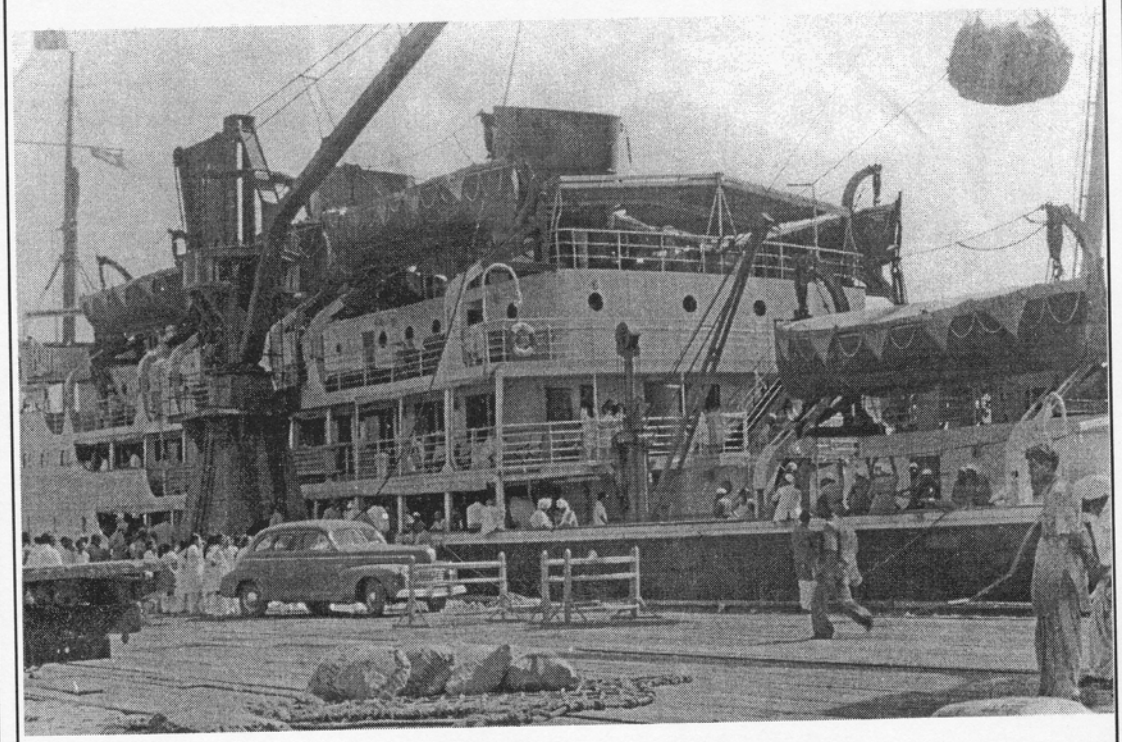

कराची— क्यामारी पोर्ट पर स्टीमर में कार व अन्य समान चढ़ाते हुए।
विदाई के इस दृश्य देखती हुई वहाँ की जनता।

फोटो- 1950

समुद्री यात्रा के साथ-साथ ईश्वरीय याद की यात्रा भी।
पिताश्री अन्य वत्सों के साथ स्टीमर में बैठे हुए
ईश्वरीय लगन में मगन दिखाई दे रहे हैं।

''स्थूल और सूक्ष्म यात्रा''

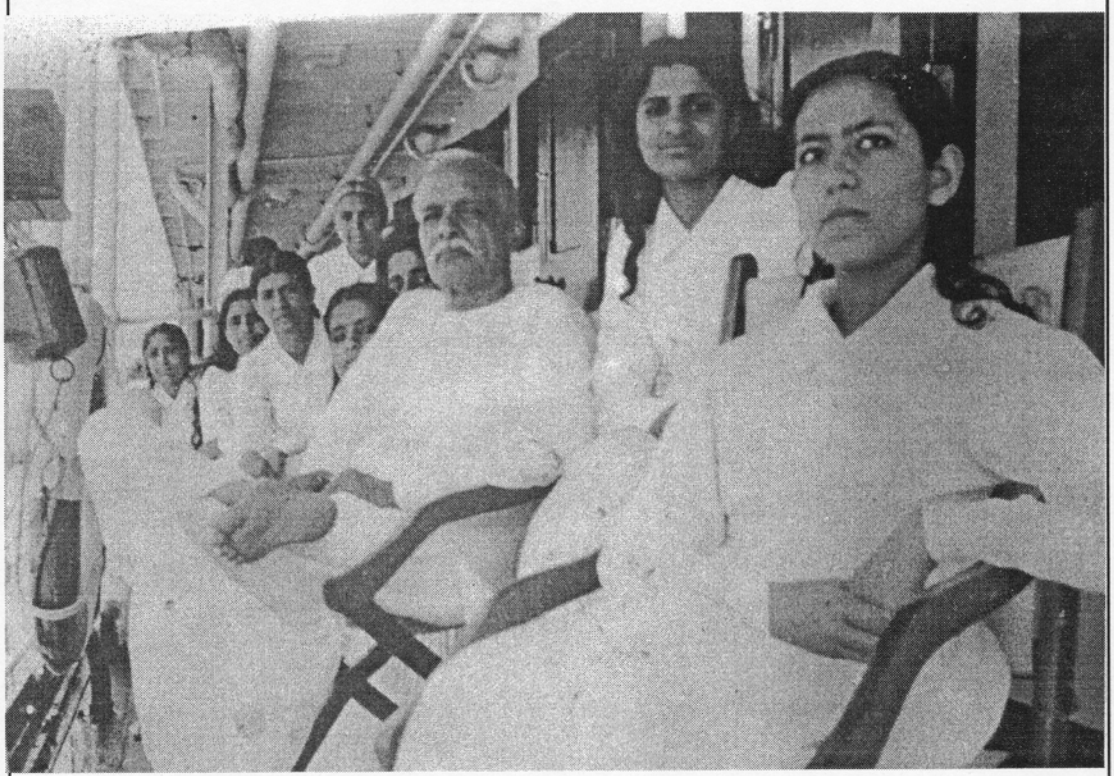

जहाज में केबिन के बाहर डेक पर बाबा के साथ भाई-बहनें।
दायें से बायें- निर्मला बहन, दादी प्रकाशमणि, लच्छू दादी, शान्तामणी दादी,
मिट्ठू दादी, गोपी बहन आदि।

फोटो— 1950

स्थूल यात्रा के साथ-साथ ईश्वरीय याद की यात्रा होती रहे
तो थकान कैसी ?
बाबा कहते— मीठे बच्चे, शिव बाबा की याद में मीलों चले जाओ,
तो भी थकेंगे नहीं।
ब्रह्मा-वत्स प्रभु-स्नेह की मस्ती में मुश्किल को सहज बनाते
आगे बढ़ते हुए।

''संसार का बोझ उठाने वाले,
प्रभु तेरे बोझ उठा लेंगे''

आबू रोड से आबू पर्वत सिर ज़रूरी सामान पैदल लाते हुए ब्रह्मा- वत्स।

फोटो– 1951

छोटे-बड़े हर कार्य को
शिव बाबा की याद में करके
शिव-शक्तियों ने
कर्म को यादगार बना दिया...।

''जैसा कर्म हम करेंगे, हमें देख सभी करेंगे''

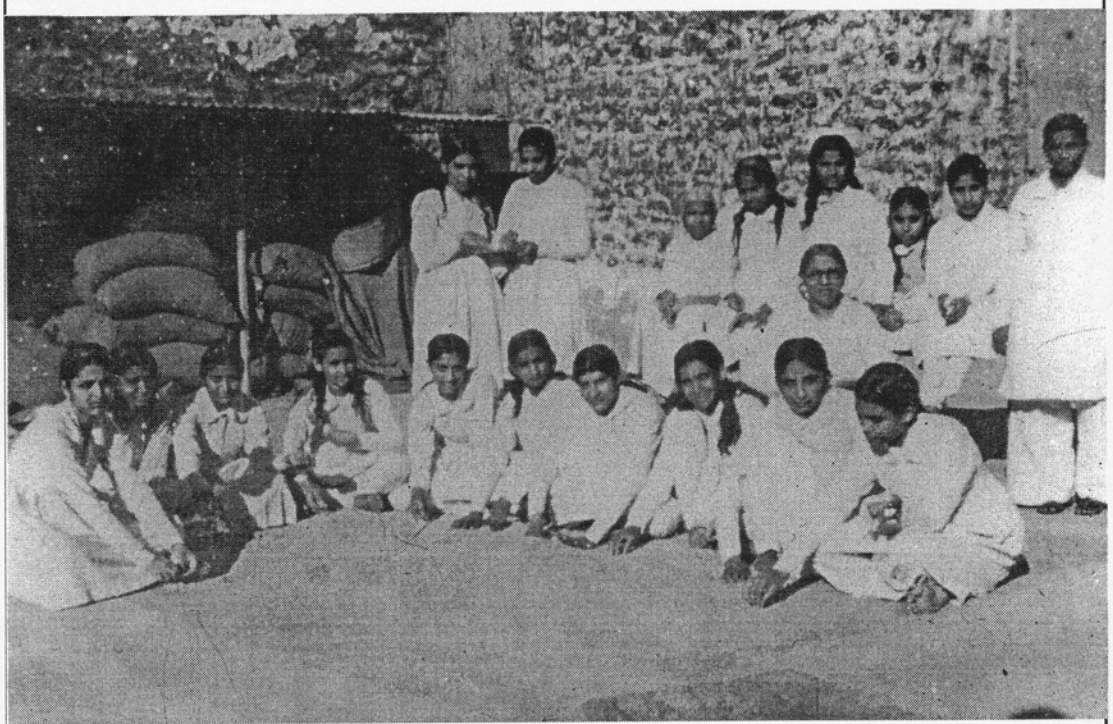

आबू— बृजकोठी में बहनें ईश्वरीय सेवा करते हुए।
सभी मिल कर अनाज की सफ़ाई कर रही हैं। (बायें से दायें) बहन देवी जी,
बहन गोपी जी, बहन जशोदा जी, दादी गुलज़ार जी, बहन जमुना जी,
दादी शान्तामणि जी, बहन देवा जी, बहन लीलावती जी, बहन मिट्ठू जी।
(पीछे की पंक्ति में बायें से दायें) दादी कमलसुन्दरी जी, बहन सीता जी,
माता मतबरी जी, दादी प्रकाशमणि जी, बहन कमलमणि जी।

फोटो– 1952

मीठे बच्चे!

अन्दर-बाहर साफ़ रहना है। दिल साफ़ तो मुराद हासिल।

ईश्वरीय परिवार से सच्चा रूहानी प्यार रखना है।

किसी से भी नया हिसाब-किताब नहीं बनाना है।

पुराने सब हिसाब-किताब चुक्तू करने हैं।

''कर ले कर्म की तू पहचान...''

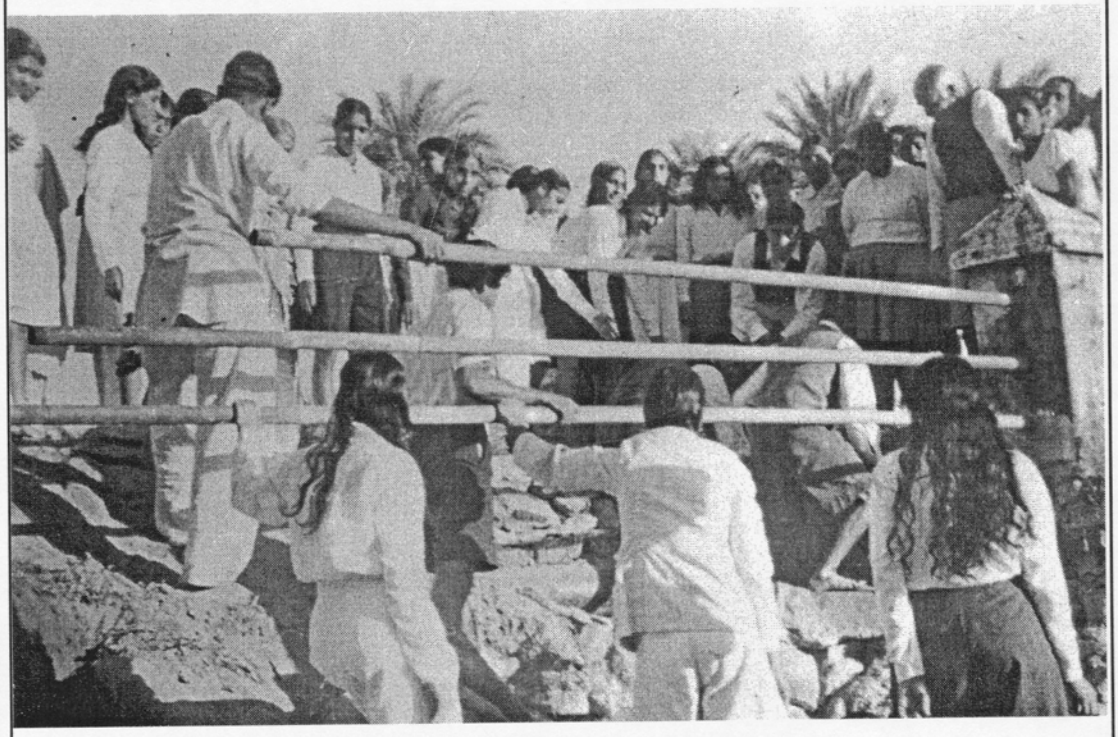

आबू— बृजकोठी में जाने के रास्ते का छोटा पुल ठीक करते हुए भाई- बहनों के साथ बाबा- ममा भी बच्चों में उमंग- उत्साह भर रहे हैं।

फोटो- 1953

मीठे बच्चे!

कर्मयोगी बन कर, हर कर्म करना है।

यज्ञ के प्रति सदा वफादार रहना है।

तुम्हें आलरउण्डर बन कर

हर प्रकार की यज्ञ-सेवा करनी है।

''रूहानी सेवा के साथ-साथ कर्मणा सेवा ज़रूरी''

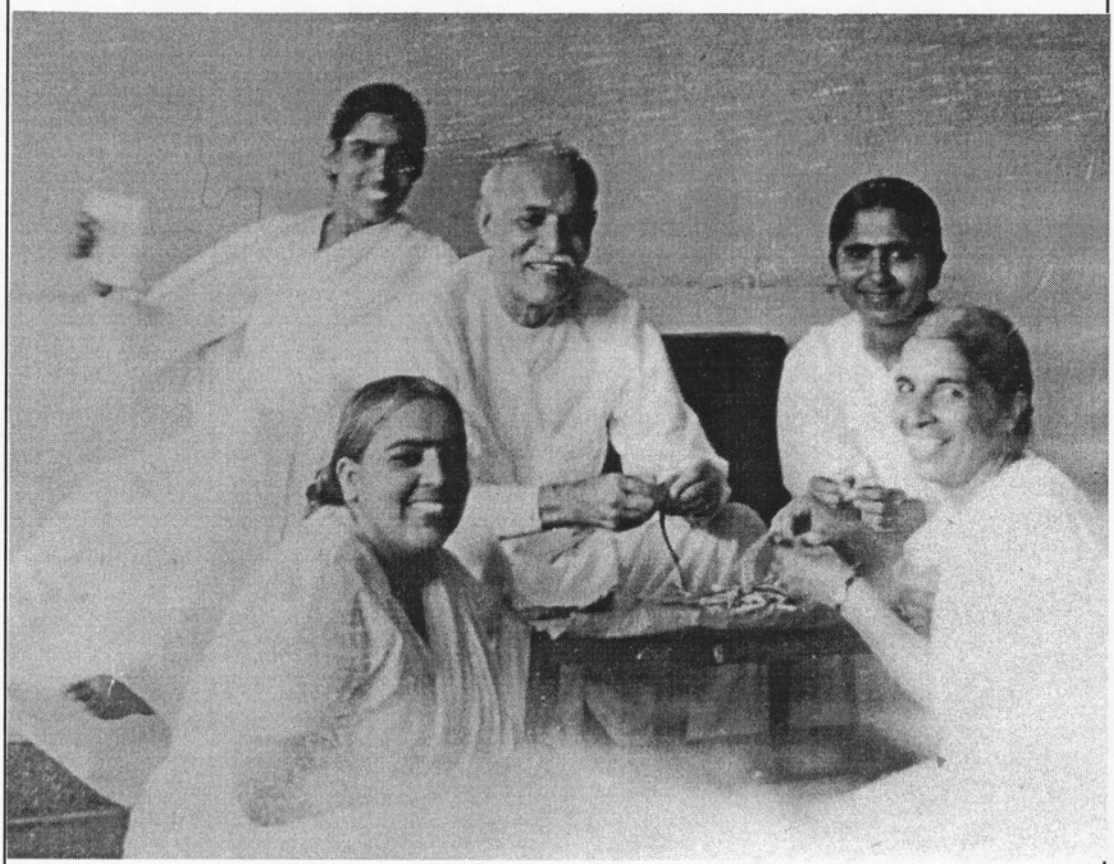

आबू— बृजकोठी में बाबा के साथ दादी जानकी जी, दादी निर्मलशान्ता जी, दादी मनोहर इन्द्रा जी, बहन हरदेवी जी सब्जी काटते हुए।

फोटो– 1953

मीठे बच्चे!

सवेरे-सवेरे उठने की आदत डालो।

अमृतवेले उठ बहुत प्यार से बाप को याद करो।

बाप से मीठी-मीठी रूह-रिहान करो।

सवेरे-सवेरे अजपाजाप करने से आत्मा पावन बन जायेगी।

''लगन में मगन होना ही योग है''

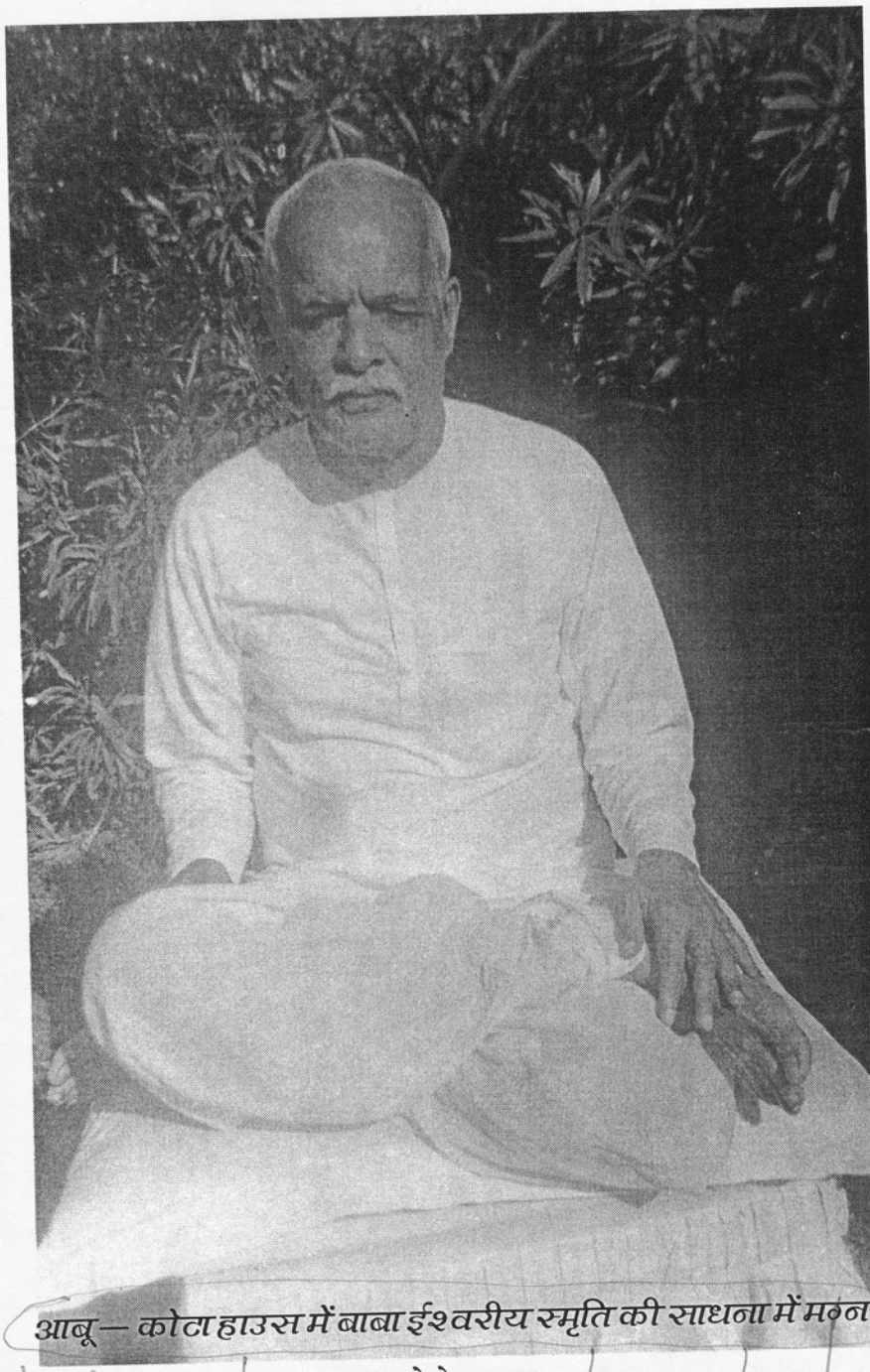

आबू— कोटा हाउस में बाबा ईश्वरीय स्मृति की साधना में मग्न।

फोटो– 1955

मीठे बच्चे!

आत्मा को सतोप्रधान बनाने के लिए

याद का चार्ट ज़रूर रखना है।

जितना-जितना याद की टेव पड़ेगी उतना विकर्म विनाश होते जायेंगे।

कर्मातीत अवस्था समीप आती जायेगी।

"वो दिन कितने प्यारे थे...!"

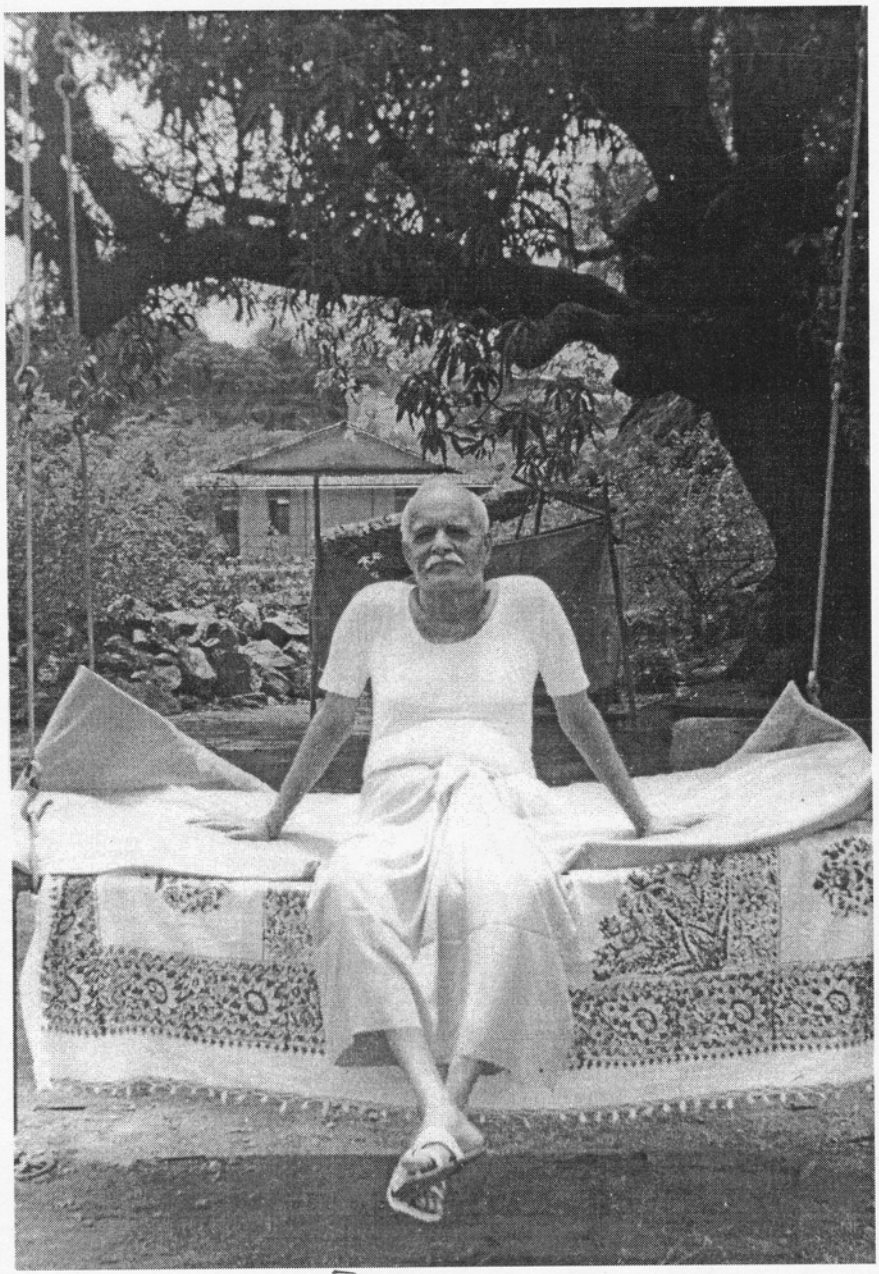

आबू — ~~कोल हाउस~~ में बाबा झूले पर याद की मस्ती में।

फोटो– 1959

मीठे बच्चे !

अतीन्द्रिय सुख संगमयुग का ईश्वरीय वर्सा है।

तुम्हें नारायणी नशे में रह,

अतीन्द्रिय सुख के झूले में झूलते रहना है।

''ज़िम्मेवारी संभालते हुए सदा हल्के''

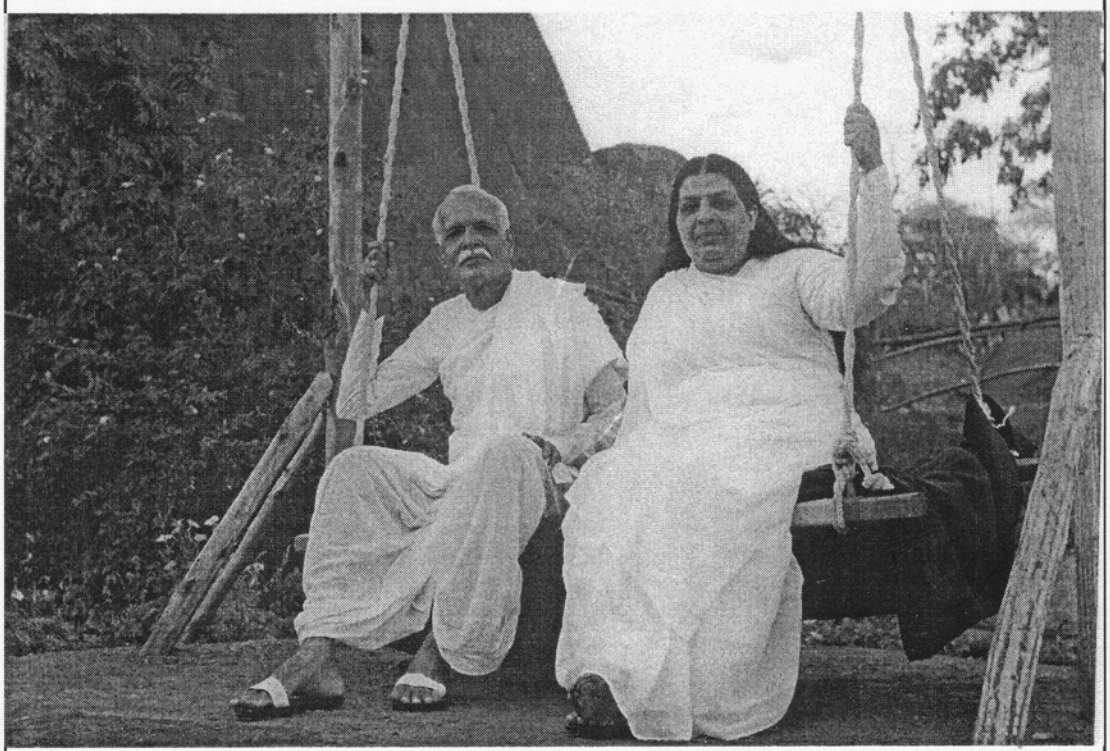

आबू— पाण्डव भवन में बाबा- ममा यादों के झूले में झूलते हुए।

फोटो- 1959

मीठे बच्चे!

तुम बच्चों को संग की बहुत सम्भाल करनी है।

सदा अच्छे स्टूडेन्ट का संग करना है।

अगर कोई ज्ञान-योग के सिवाय उल्टी बात करे,

मुख से रत्नों की बजाय पत्थर निकाले या

किसी की ग्लानि सुनाये, तो उसके संग से दूर रहना है।

''बाँधी है बाबा, तुम संग जीवन की डोर''

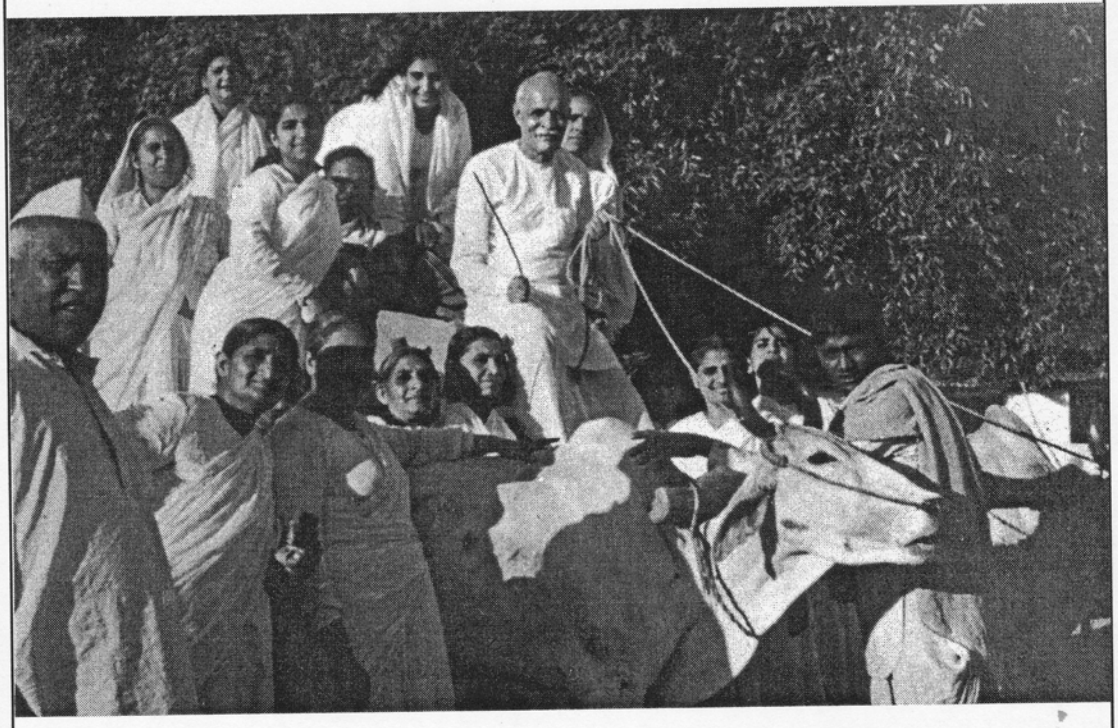

सहारनपुर (उ.प्र.) — बाबा बैल गाड़ी पर सवार।
दादी प्रकाशमणि, मिट्ठू दादी, ध्यानी दादी, सन्देशी दादी, कुँज दादी और साथ में
वहाँ के भाई-बहनें भी ख़ुशी में झूम रहे हैं।

फोटो– 1960

मीठे बच्चो,

स्वयं को ज्ञान-सागर बाप से निकली हुई

चैतन्य ज्ञान-गंगा समझ,

आत्माओं को पावन बनाने की रूहानी सेवा में

सदा तत्पर रहना है।

''अलविदा! फिर 5000 साल के बाद मिलेंगे''

सहारनपुर— ब्रह्मा बाबा कार में बैठे हैं और सभी भाई- बहनें विदाई दे रहे हैं।
दादी सन्देशी जी, दादी प्रकाशमणि जी, बहन रतनमणि जी भी खड़ी हैं।

फोटो– 1960

मीठे बच्चे!

तुम बच्चों को किसी से भी दुश्मनी नहीं रखनी है।

तुम्हारा सबसे बड़ा दुश्मन है रावण (पाँच विकार)। इस पर विजय पाना है। कोई भी मनुष्य तुम्हारा दुश्मन नहीं है।

तुम सब एक निराकार परमात्मा की सन्तान आपस में भाई-भाई हो।

''जीवन को एक खेल समझ कर खेलो''

आबू— पाण्डव भवन में बाबा- मम्मा,
बच्चों के साथ बैडमिण्टन खेलने के बाद।

फोटो- 1960

मीठे बच्चो,

तुम चैतन्य लाइट हाउस हो।

तुम्हारी एक आँख में मुक्ति और दूसरी आँख में जीवनमुक्ति हो।

तुम सबको शान्तिधाम और सुखधाम का रास्ता बताओ।

तुम्हें अब शान्तिधाम और सुखधाम को याद करना है।

''अशरीरी बन अपने को आत्मा समझ परमात्मा को याद करना ही सहज राजयोग है''

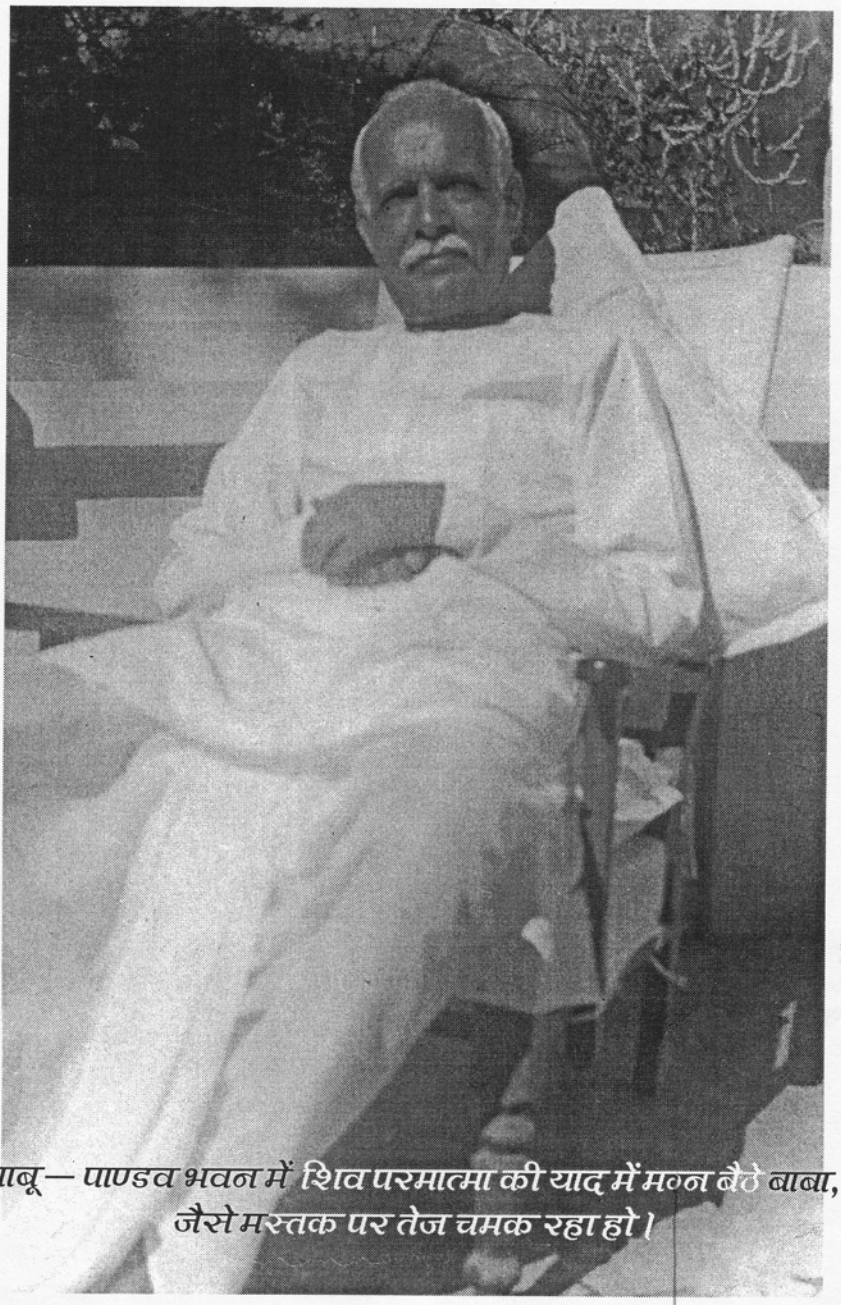

आबू— पाण्डव भवन में शिव परमात्मा की याद में मग्न बैठे बाबा, जैसे मस्तक पर तेज चमक रहा हो।

फोटो- 1960

मीठे बच्चो,

तुम्हें अपनी बुद्धि सदा बेहद में रखनी है।

मेरा-मेरा छोड़, जगत् का कल्याण करना है

क्योंकि तुम विश्व कल्याणी हो।

जिनका साथी है भगवान,
क्या करेगा आंधी और तूफान...

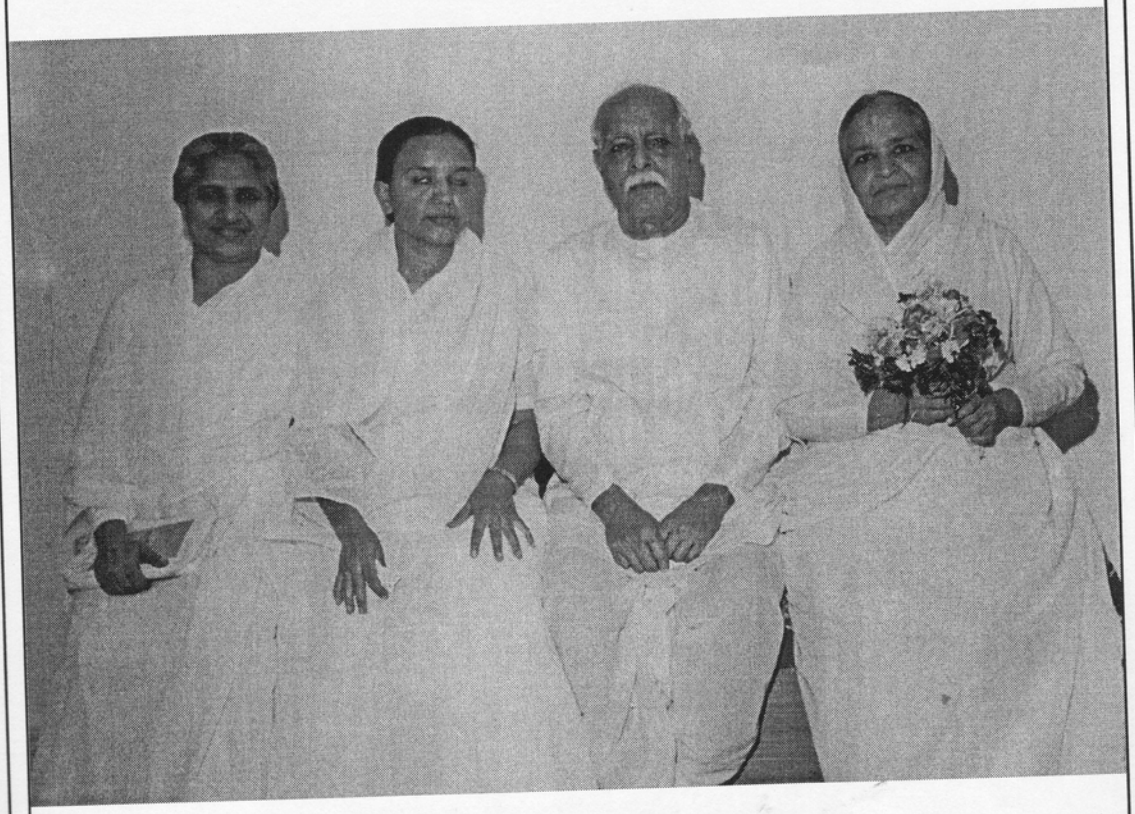

मुम्बई— बाबा के साथ (बायें से दायें) दादी प्रकाशमणि जी, डॉ. निर्मला बहन जी एवं दादी बृजइन्द्रा जी।

फोटो- 1961

मीठे बच्चे!

ईश्वरीय जन्म हीरे तुल्य है।

इसी जन्म में आत्मा और शरीर दोनों को पावन बनाना है।

इसलिए शरीर से तंग नहीं होना है। इसकी सम्भाल करनी है,

बाक़ी इसमें ममत्व नहीं रखना है।

बालकों के बालक, युवाओं के युवा और बुजुर्गों के बुजुर्ग अनुभवी हमारे बाबा

मुम्बई— वाटरमलु मेन्सन सेवाकेन्द्र पर बाबा के साथ ग्रुप फोटो में वहाँ के भाई।

~~*फोटो में*~~

दादा आनन्द किशोर जी तथा भाऊ विश्व किशोर जी भी दिखई दे रहे हैं।

फोटो- ~~1961~~ 1959

मीठे बच्चे!

हरेक से सद्गुण ग्रहण कर, गुणवान बनना है।

सबके गुण रूपी मोती ही चुगने हैं।

तुम होली हंस हो।

विश्व रंग मंच पर उपस्थित महान विभूतियाँ

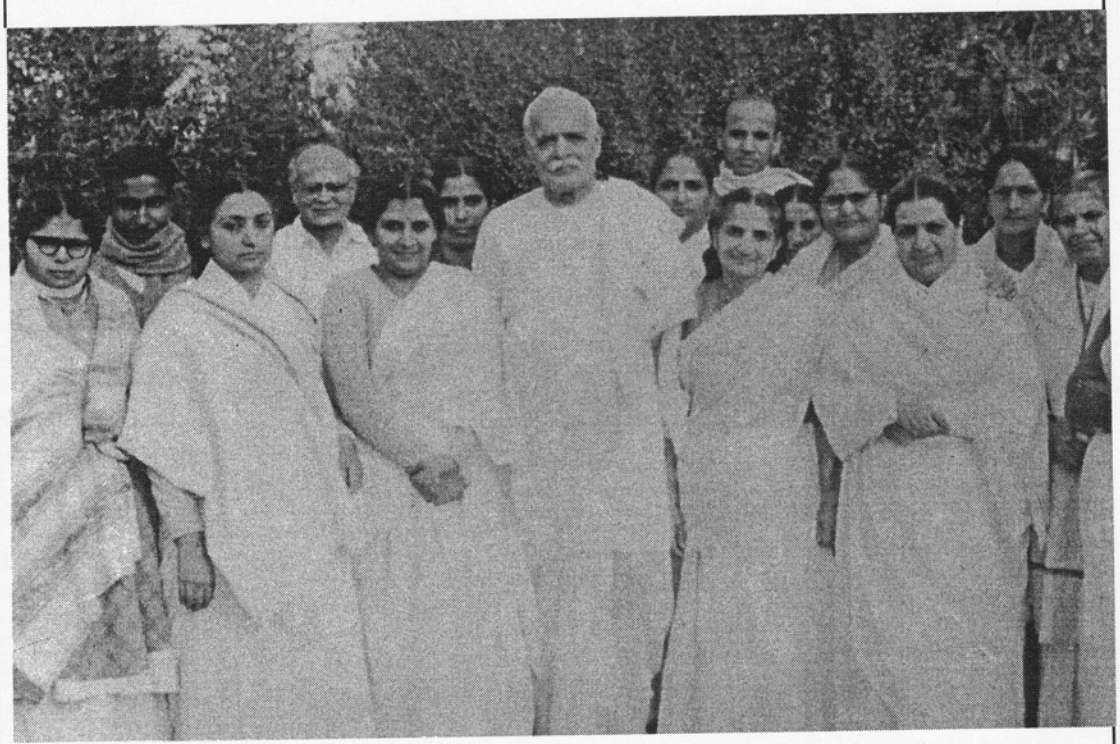

आबू— पाण्डव भवन में बाबा के साथ ग्रुप फोटो में (बायें से दायें)
बहन चन्द्रा जी, विश्व किशोर भाऊ, बहन सन्देशी जी, दादी मनोहर जी,
दादी आलराउण्डर जी, दादी सन्तरी जी, दादी पुष्पशान्ता जी, मम्मा जी,
बहन जवाहर जी एवं दादा आनन्द किशोर जी।

फोटो– 1962

मीठे बच्चे!

आप महान आत्मा हो।

आपके एक-एक वाक्य महावाक्य हो।

एक भी बोल व्यर्थ न जाये।

जो आवश्यक और युक्तियुक्त बोल है,

सदा वही मुख से निकले।

''पत्र के साथ रूहानी याद-प्यार''

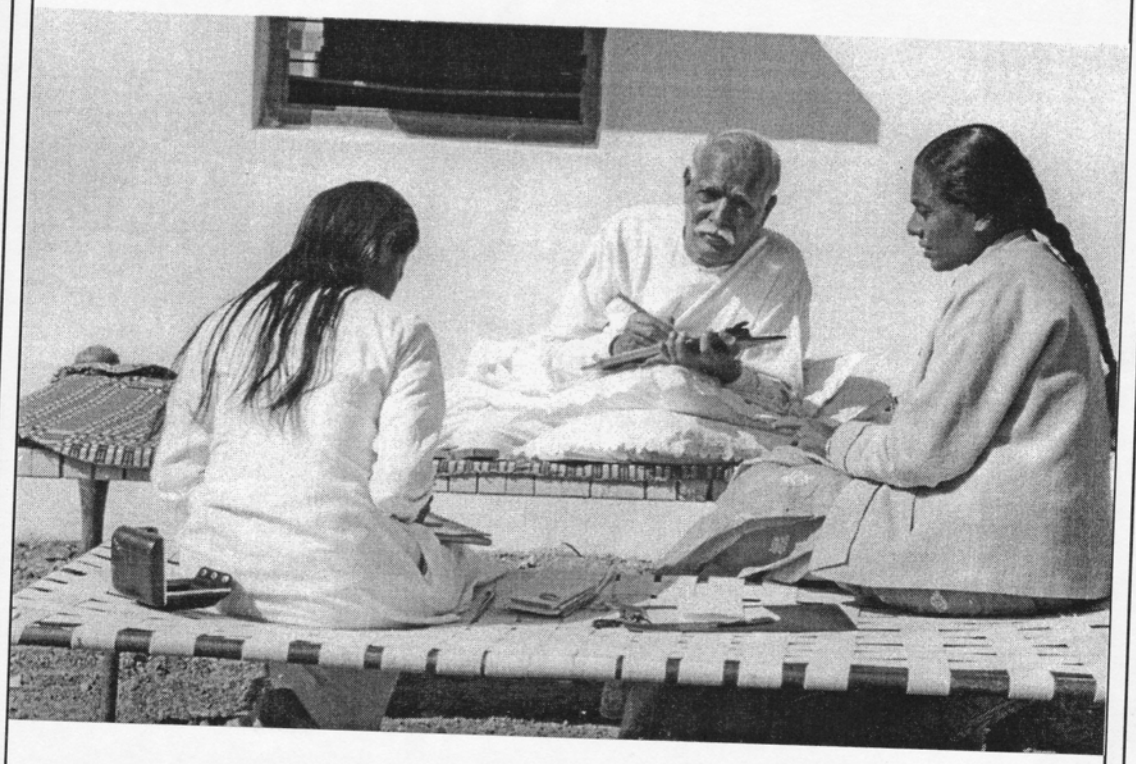

आबू— बाबा सेवाकेन्द्रों के बच्चों को पत्र लिखते हुए।
ईश्वर दादी भी पत्र लिखती हुई, साथ में उषा बहन (मुम्बई) बैठी हैं।

फोटो— 1963

मीठे बच्चो,

शिव बाबा को अपना सच्चा वारिस बनाओ।

जो कुछ तुम्हारे पास है वह उस पर वारी करो,

तो वह २१ जन्मों के लिए तुम पर बलिहार जायेगा।

21

"खुशियों भरी ज़िन्दगी हमारी..."

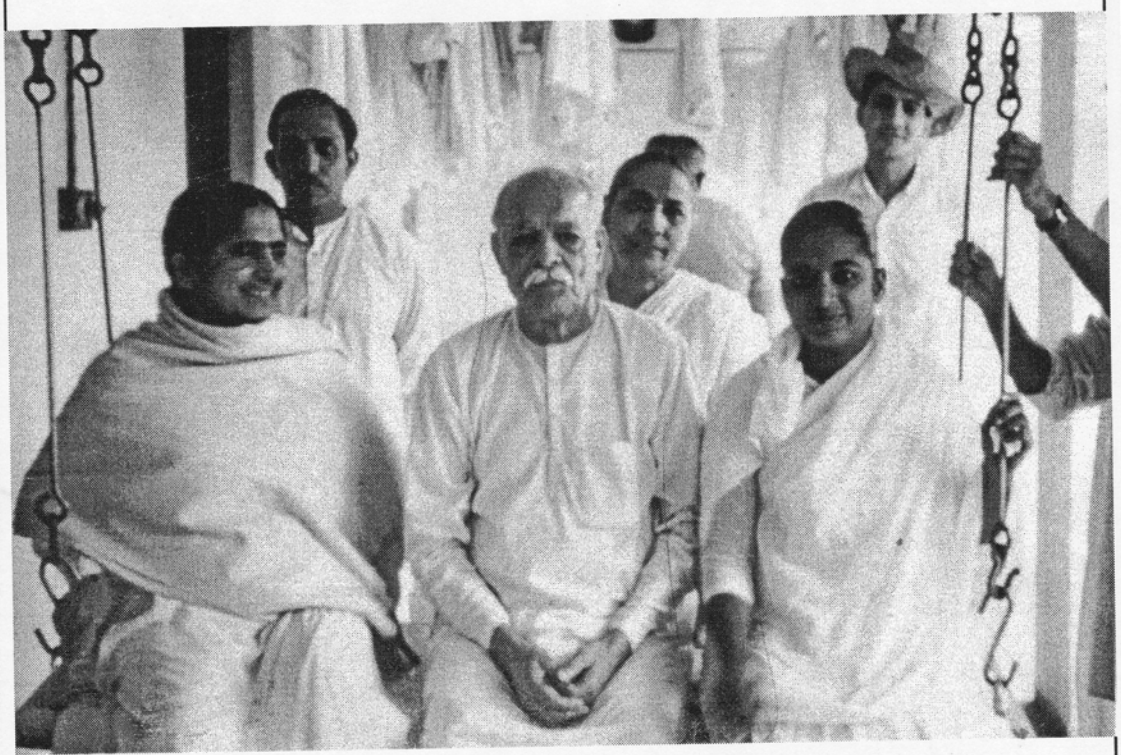

आबू — पाण्डव भवन में बाबा के साथ दादी जानकी जी, दीदी मनमोहिनी जी और अन्य भाई बहनें झूला झूलते और झुलाते हुए।

फोटो- 1963

मीठे बच्चे!

अन्तर्मुखी बन रूहानी रॉयल्टी में रहना है,

बाह्यमुखता में नहीं आना है।

अपने ख्यालात बहुत रॉयल रखने हैं।

पुरानी दुनिया की व्यर्थ बातों में बुद्धि नहीं लगानी है।

"मनन-चिन्तन ईश्वरीय जीवन का आधार है"

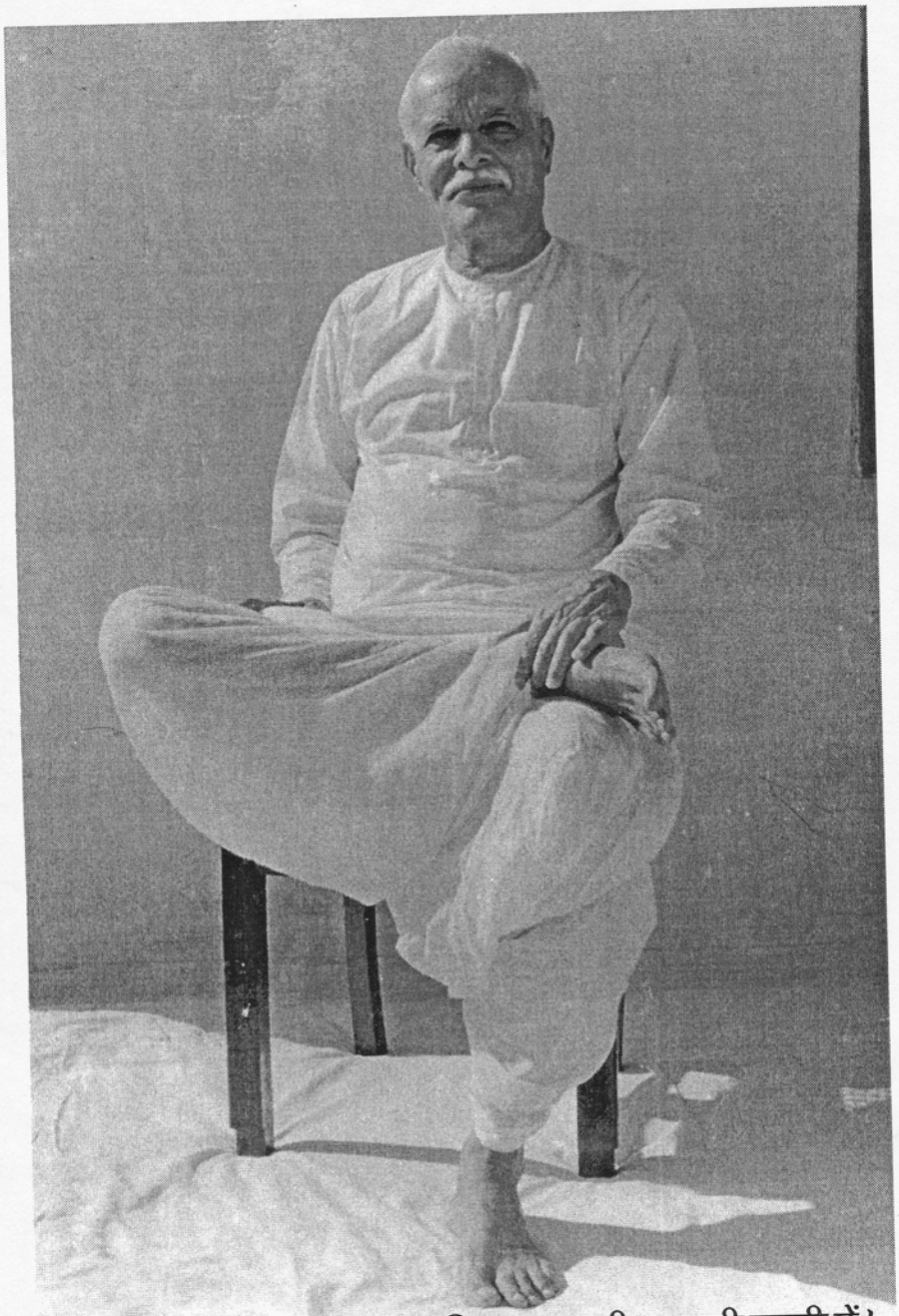

आबू— पाण्डव भवन में बाबा शिव बाबा की याद की मस्ती में।

फोटो– 1963

मीठे बच्चो!

तुम्हें आपस में संगठन बना कर ख़ूब सेवा करनी है।

सहनशीलता का गुण धारण करना है

और

सदा साक्षी रहने का अभ्यास करना है।

"विश्व इतिहास रचते पल"

दिल्ली

आबू – पाण्डव भवन में मम्मा-बाबा के साथ ग्रुप फोटो में पूना की मातायें,
साथ में दादी जानकी जी भी हैं।

फोटो– 1963/4

1964

Replace the Photo with WRC.

मीठे बच्चो!

बाप ने ज्ञान का कलश माताओं पर रखा है,

इसलिए माताओं को रिगार्ड दे, हमेशा उनको आगे रखना है।

माताओं का मर्तबा ऊँचा करना है।

माता को ही गुरु कहा जाता है।

''प्रभु हम हैं तुम्हारे, तुम हो हमारे''

आबू— बाबा- मम्मा के साथ पूना के भाई- बहनें।
(दायें से बायें) कला बहन, दादी जानकी जी, आशा बहन, सती भाभी,
कमला बहन, कमला कुमारी, नारायणी बहन, ईश्वरी माता, सुन्दरी बहन,
रानी माता आदि।

फोटो- ~~1965~~
1964

मीठे बच्चो!

सर्व सम्बन्धों का सैक्रीन एक बाप ही है।

वही सर्व सम्बन्धों का प्यार देता है।

इसलिए देहधारियों से दिल की प्रीत नहीं रखनी है।

सर्व सम्बन्ध एक बाप से ही जोड़ने हैं।

''मेरा तो एक शिव बाबा, दूसरा न कोई।''

अविस्मरणीय पल

दिल्ली — प्रसिद्ध वैज्ञानिक एल.एस. माथुर भाई की कोठी पर बाबा।
मोहिनी बहन (न्यूयार्क) और माथुर भाई की धर्मपत्नी बाबा के साथ।

फोटो- ~~1963~~ जनवरी 1965

मीठे बच्चे- प्यार का सागर बाप तुम्हें प्यार देकर गुल-गुल बना देते हैं, यह रूहानी प्यार कल्प में एक ही बार मिलता है जो अविनाशी हो जाता है। बाप के प्यार की महिमा अपरमअपार है। बाप का प्यार तुम्हें सुखधाम और शान्तिधाम का मालिक बना देता है। अभी तुम मोह जीत बन रहे हो। सतयुगी राज्य को मोह जीत राजा-रानी तथा प्रजा कहा जाता है

"खुदा भी, दोस्त भी"

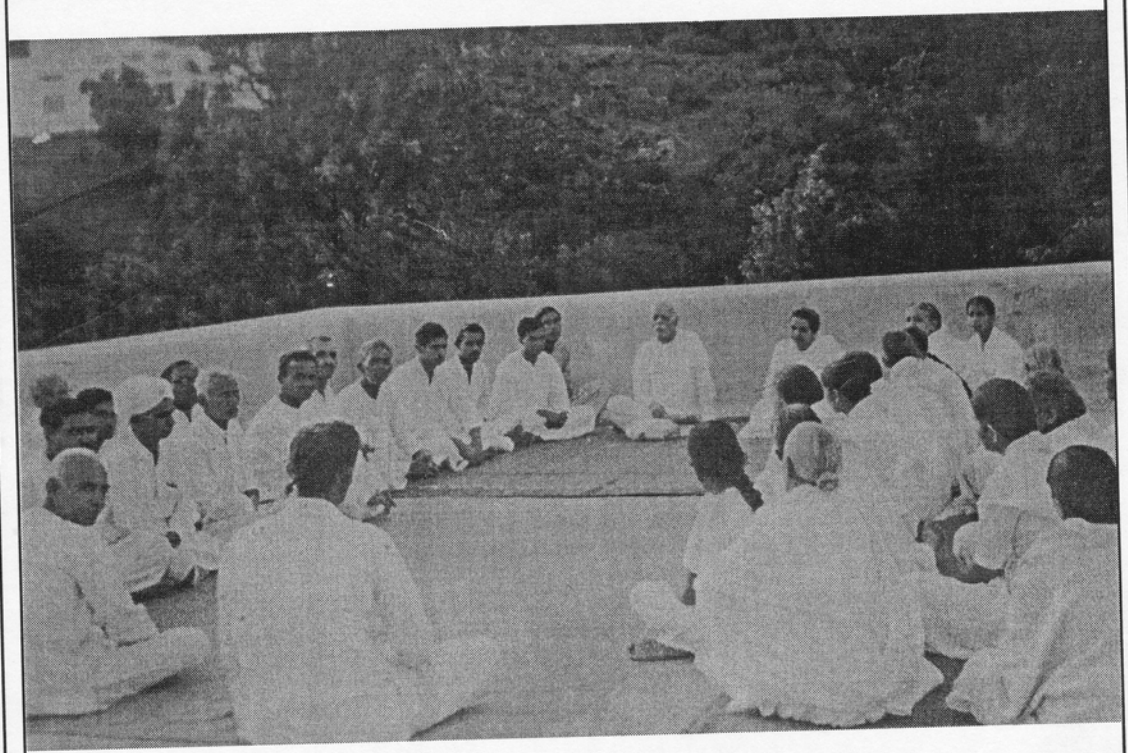

आबू— पाण्डव भवन के हिस्ट्री हाल की छत पर
बाबा- ममा के साथ पार्टी में आये हुए भाई- बहनें पिकनिक करते हुए।

फोटो- ~~1964~~ 1963

प्यारे बच्चो!

सूक्ष्मवतनवासी फ़रिश्ता बनने के लिए

इस रूहानी सर्विस में दधीचि ऋषि की तरह

हड्डी-हड्डी स्वाहा करनी है।

यज्ञ तुम्हें मन-इच्छित फल देता है,

इसलिए

यज्ञ की सेवा बहुत प्यार से करनी है।

''कर्मणा सेवा से तन और मन दोनों स्वस्थ होते हैं''

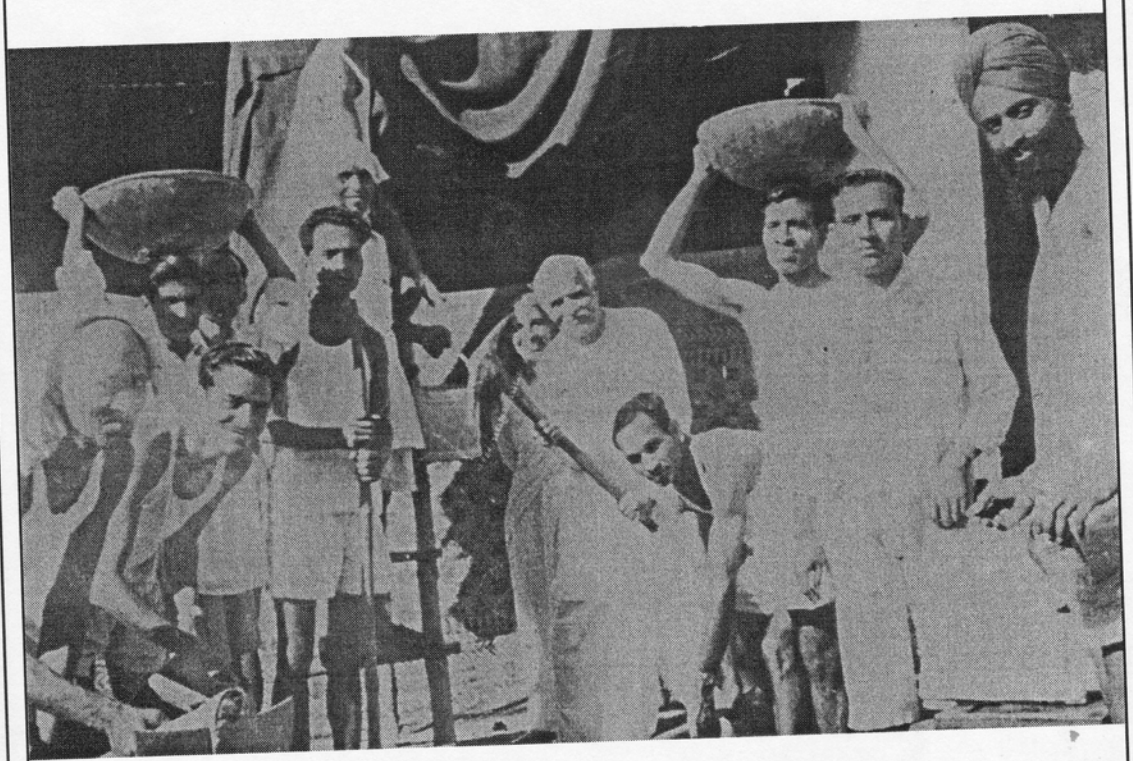

आबू— पाण्डव भवन परिसर के भीतरी मार्ग की मरम्मत करते हुए भाई- बहनें।
बाबा भी सहयोग की अञ्जली देते हुए।

फोटो- 1964

मीठे बच्चे!

आत्मा को सतोप्रधान बनाने के लिए

हर कर्म कर्मयोगी बन कर करो।

कम-से-कम सारे दिन में 8 घंटे

बाप को याद करने का पुरुषार्थ करो।

शरीर निवाह-अर्थ कर्म करते हुए

बुद्धियोग बाप से जुटा रहे।

चलते, फिरते और कर्म करते

''हाथ कार डे दिल यार डे।''

"याद और टोली"

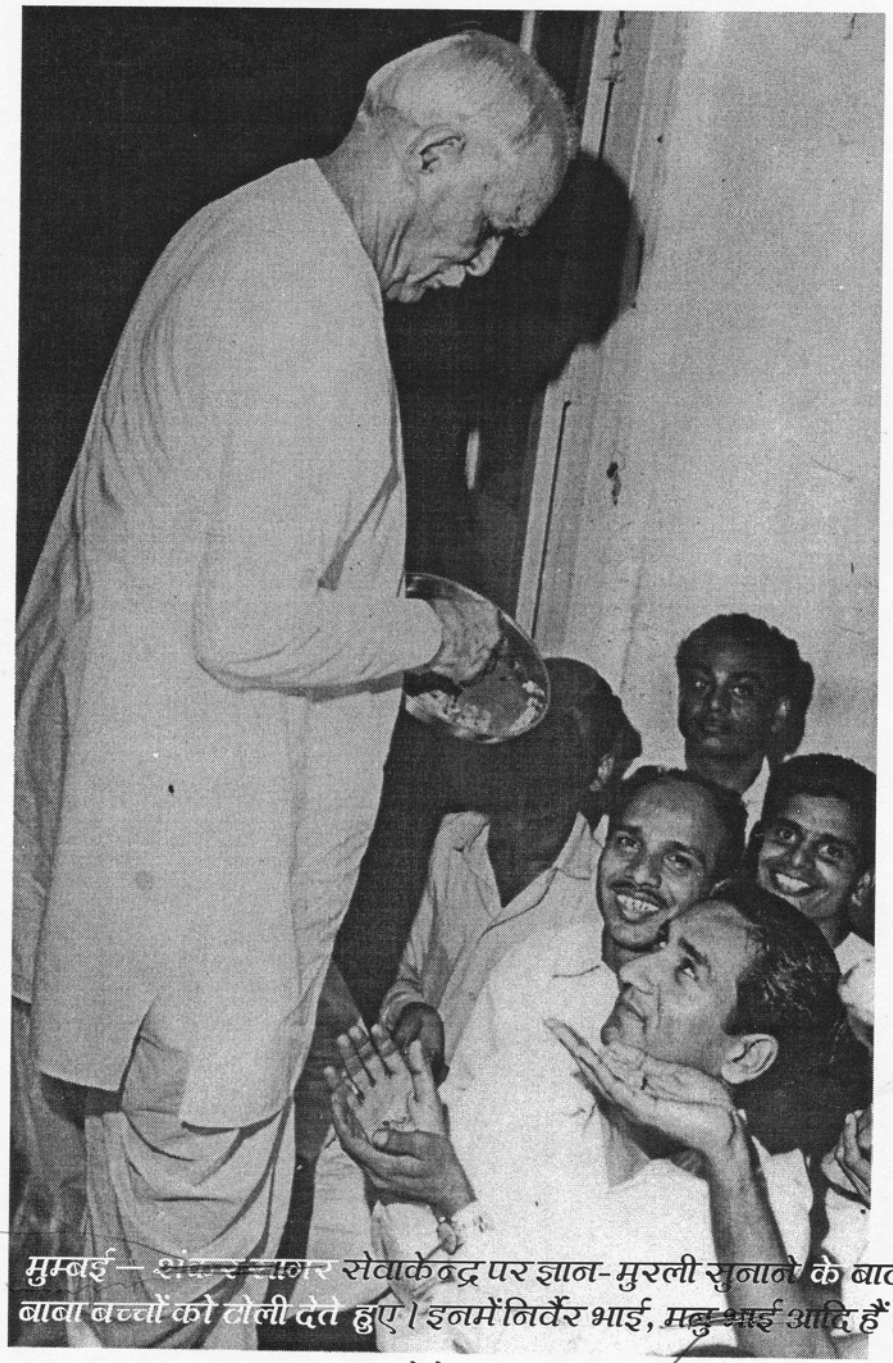

मुम्बई— ~~शंकर नगर~~ सेवाकेन्द्र पर ज्ञान-मुरली सुनाने के बाद बाबा बच्चों को टोली देते हुए। इनमें निर्वैर भाई, ~~मधु~~ भाई आदि हैं।

फोटो- 1965

मीठे बच्चे!

बाप द्वारा जो ज्ञान का रूहानी भोजन मिलता है,

उसे उगारते रहना है।

विचार सागर मंथन करना है।

ज्ञान-घास को हज़म कर आत्मा को तन्दुरुस्त बनाना है।

विकारों की बीमारी से बचना है।

"हैपी बर्थ डे टु यू प्यारे शिव बाबा"

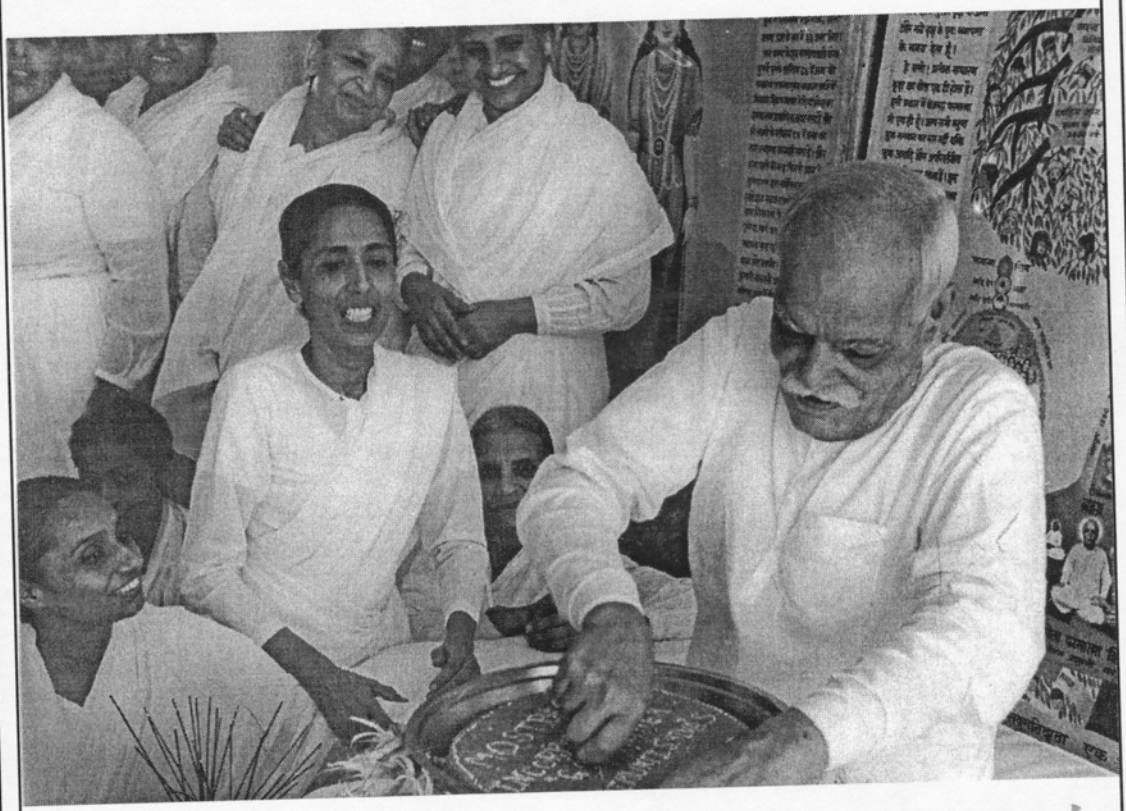

मुम्बई— सेवाकेन्द्र पर
बाबा महाशिवरात्रि के अवसर पर केक काट करते हुए।
शील दादी, रतनमोहिनी दादी, बृजइन्द्रा दादी, प्रकाशमणि दादी आदि
प्रसन्न मुद्रा में।

फोटो– 1965

मीठे बच्चो!

तुम्हें मनुष्य से देवता बनना है,

इसलिए अपना खान-पान बहुत शुद्ध रखना है।

अशुद्धि को त्याग, सच्चा वैष्णव बनना है।

''आत्मा और परमात्मा का रूहानी मिलन मेला''

मुम्बई— शंकर सागर सेवाकेन्द्र पर
बाबा वहाँ की आत्माओं को ज्ञान- रत्नों से सजाते हुए।

फोटो– 1966

मीठे बच्चे !

तुम शाहनशाह के बच्चे हो,

तुम्हें किसी से भी कुछ माँगना नहीं है।

माँगने से मरना भला।

गुप्त दान का भक्ति में भी बहुत महत्व है।

तुम बच्चे भी गुप्त दान करो।

एक हाथ से करो दूसरा न देखे।

तुम्हें अपने ही तन-मन-धन से भारत को स्वर्ग बनाना है।

कभी भी अपना शो नहीं करना है।

तकदीर जगाकर आई हूँ

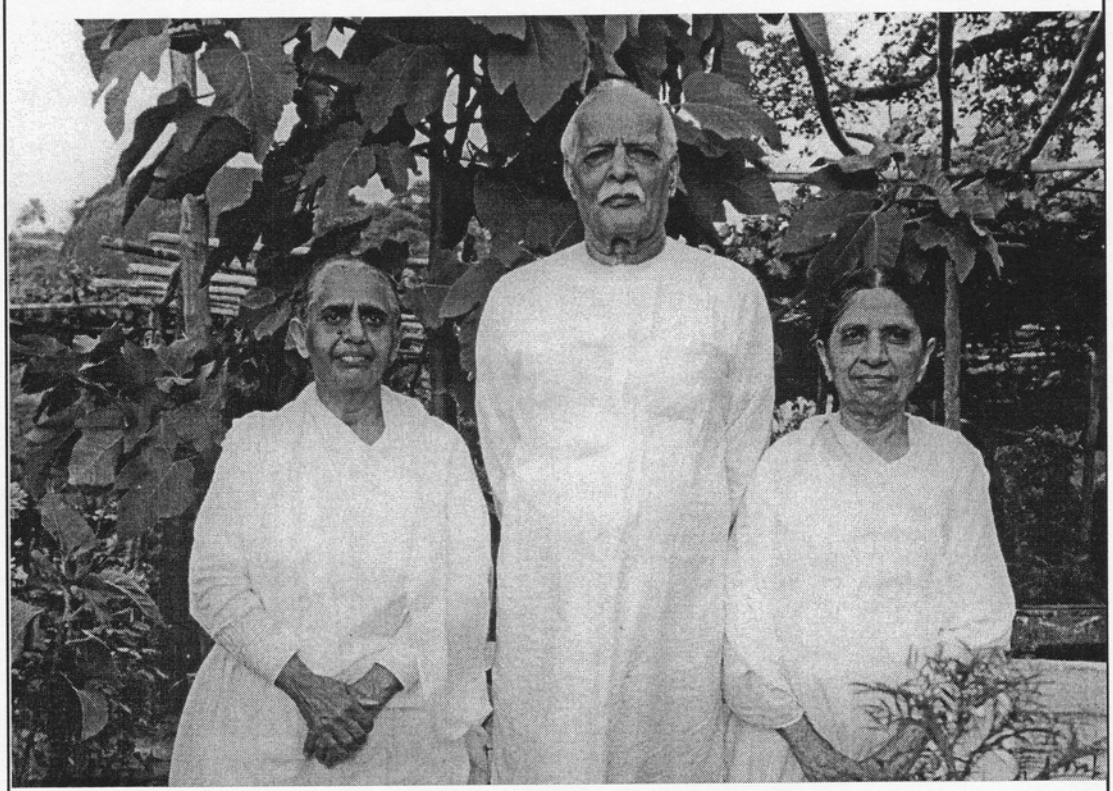

आबू— पाण्डव भवन में बाबा के साथ क्वीन मदर
(~~रतनमोहिनी दादी~~ की लौकिक माता जी)
और
देवी खुशी माता।

फोटो– 1967

मीठे बच्चो!

हरेक के निश्चित पार्ट को जान,

सदा निश्चिन्त रहना है।

बनी बनाई बन रही... ड्रामा पर सदा अचल

और

अडोल रहना है।

"गो सून, कम सून : जल्दी जाओ, जल्दी आओ"

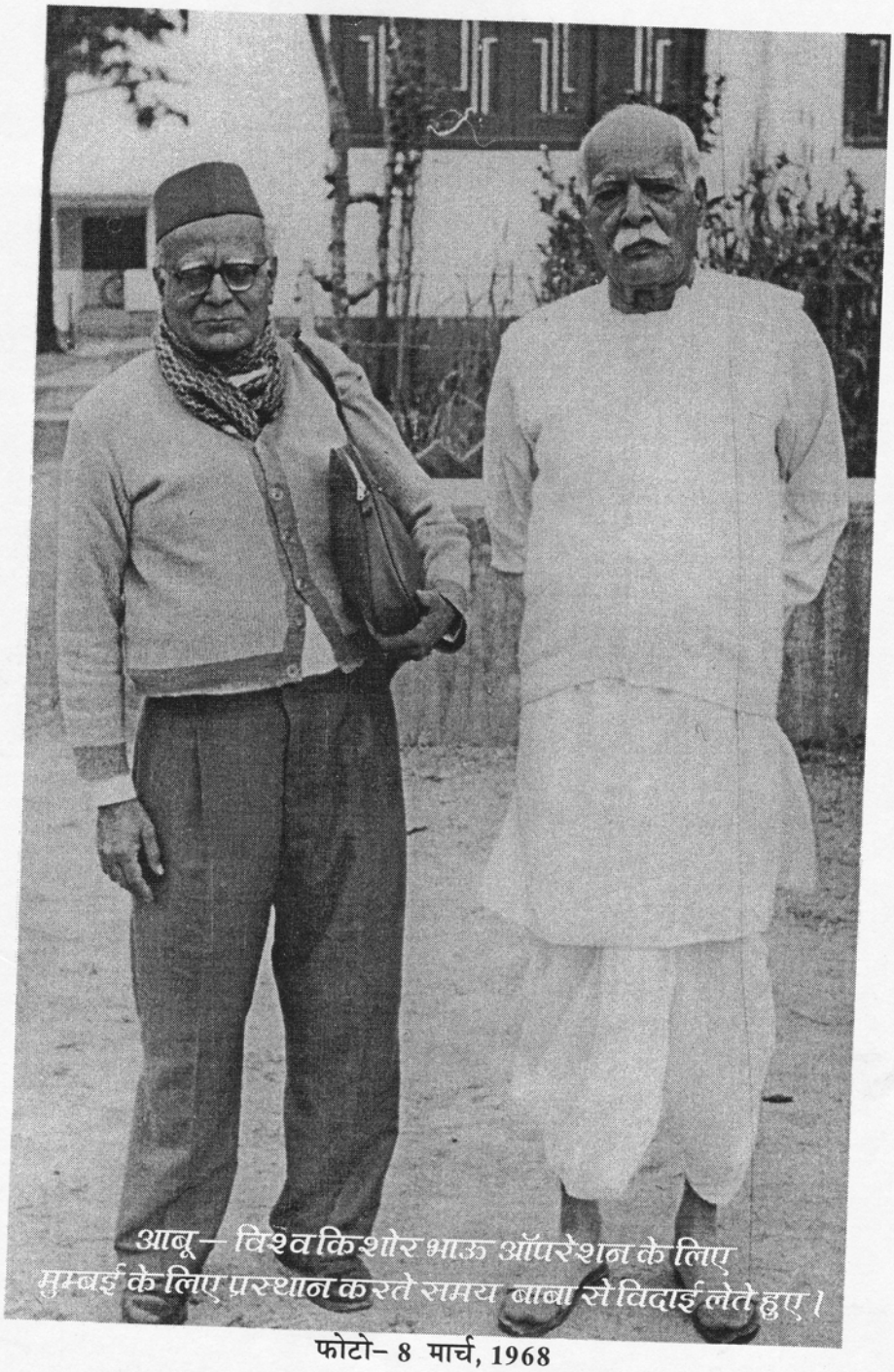

आबू – विश्व किशोर भाऊ ऑपरेशन के लिए मुम्बई के लिए प्रस्थान करते समय बाबा से विदाई लेते हुए।

फोटो– 8 मार्च, 1968

प्यारे बच्चो!

तुम्हें पुराने कर्मों का खाता समाप्त करना है

और

इन्द्रीयाजीत बन, कर्मातीत बनना है।

बच्चे, अशरीरी बनने का ऐसा अभ्यास ह

जो अन्त में एक बाप के सिवाय और कोई याद न आये।

"वो दिन कितने प्यारे थे, जब साकार बाबा साथ हमारे थे"

~~वो दिन भी कितने प्यारे थे जब साकार बाबा साथ हमारे थे~~

"यहाँ से भरपूर बादल बनकर जाओ, वहाँ ज्ञान की बरसात बरसो"

आबू— पाण्डव भवन में बाबा के साथ
पटना के जालान बाबू, सन्देशी दादी, दादी प्रकाशमणि जी
और
अन्य एक माता।

मीठे बच्चो !

तुम्हारा दिल वाला एक बाप है,

इसलिए दिल की बातें एक बाप को ही सुनानी है

और

एक बाप को ही अपना दिलवर बनाना है।

"प्यार के सागर ..."

पाण्डव भवन

आबू– (~~कोटा हाउस~~) बाबा गाय के बछड़े को प्यार करते हुए।
आख़िर बाबा सबके बाबा हैं ना! 1962

मीठे बच्चो!

ज्ञान-रत्नों की दुकान खोल, सच्ची कमाई करनी और करानी है।

इसी में अपना समय सफल करना है।

एक बाप से ही सच्चा, अविनाशी व्यापार करना है।

"लौकिक धन्धा-धोरी करते, सदा एक बाप को याद करो"

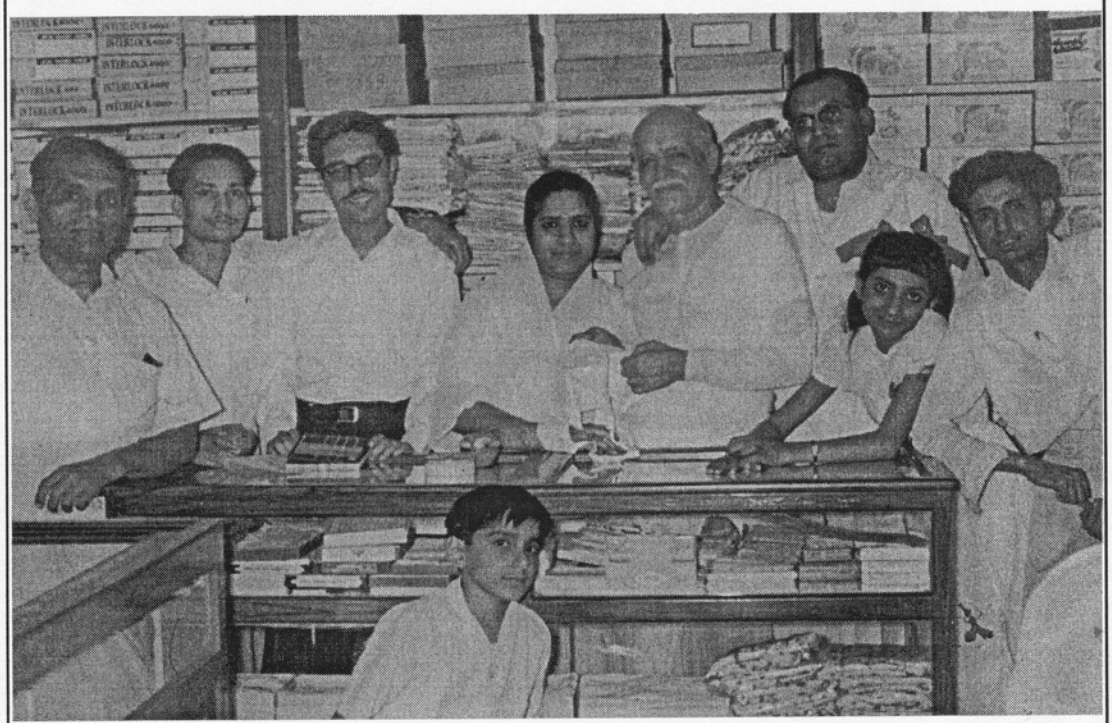

लखनऊ — गोविन्द भाई और लीला माता की दुकान पर बाबा।

प्यारे बच्चो!

तुम रूहानी बगीचा के चैतन्य फूल हो।

तुम्हें सदैव रूहानियत की ख़शबू फैलानी है।

"बच्चे सबके मन के अच्छे"

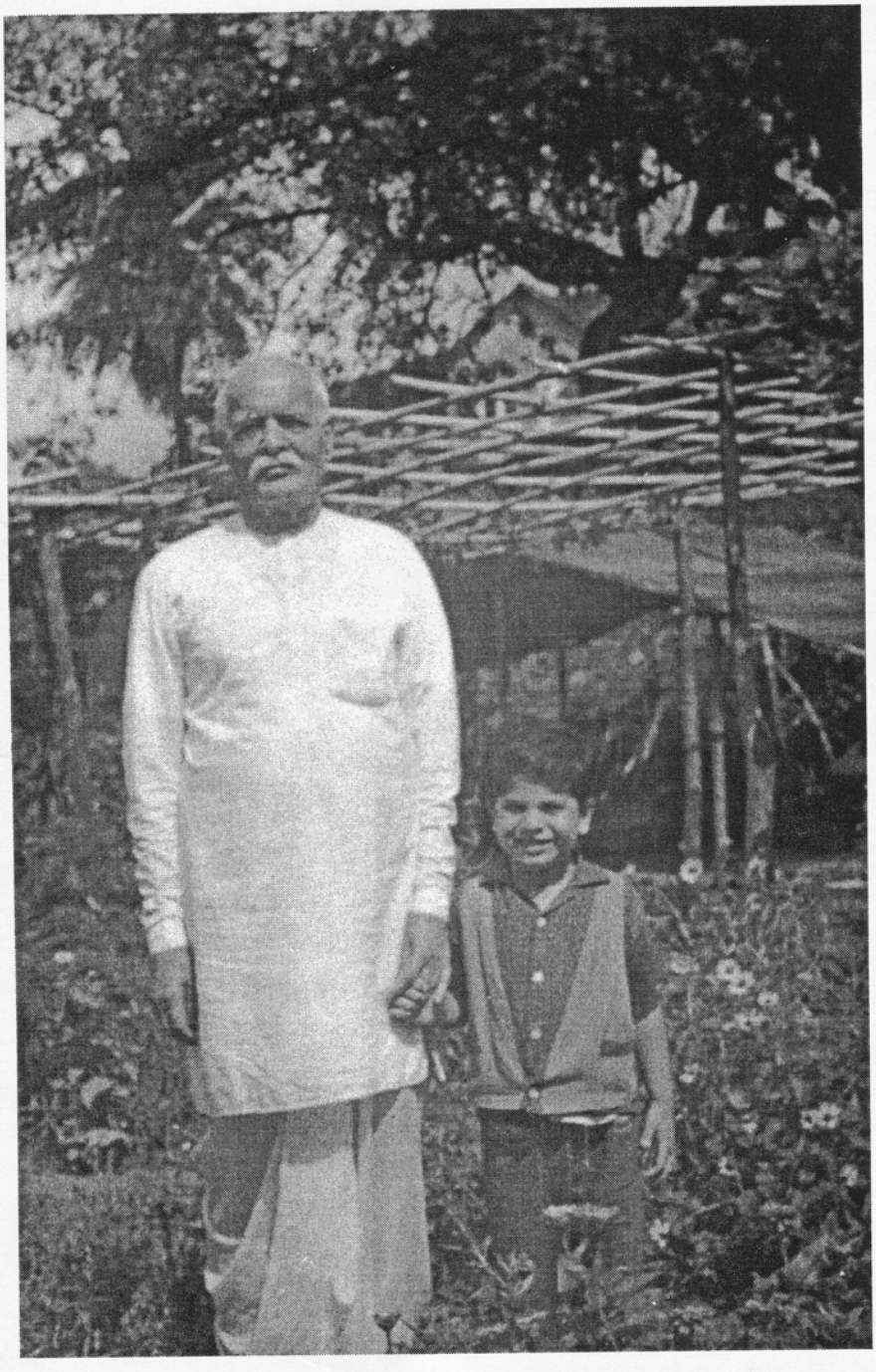

आबू— (पाण्डव भवन) बाबा बगीचे में बच्चे के साथ घूमते हुए। 1963

विश्व की आधार और उद्धार मूर्त
यही वो शिव-शक्तियाँ हैं
जिन्होंने त्याग, तपस्या और नि:स्वार्थ सेवा की
गंगा-यमुना और सरस्वती बहा कर
भारत को पुनर्जीवित किया था।

इन्हें ही तो भक्त मन्दिरों में देवियों के रूप में पूजते हैं।
पुन: भारत को स्वर्ग बनाने की रूहानी सेवा के लिए
अवतरित हुई हैं—
''शिव-शक्ति भारत मातायें वन्दे मातरम्''

"शिव-शक्ति वन्दे मातरम्"

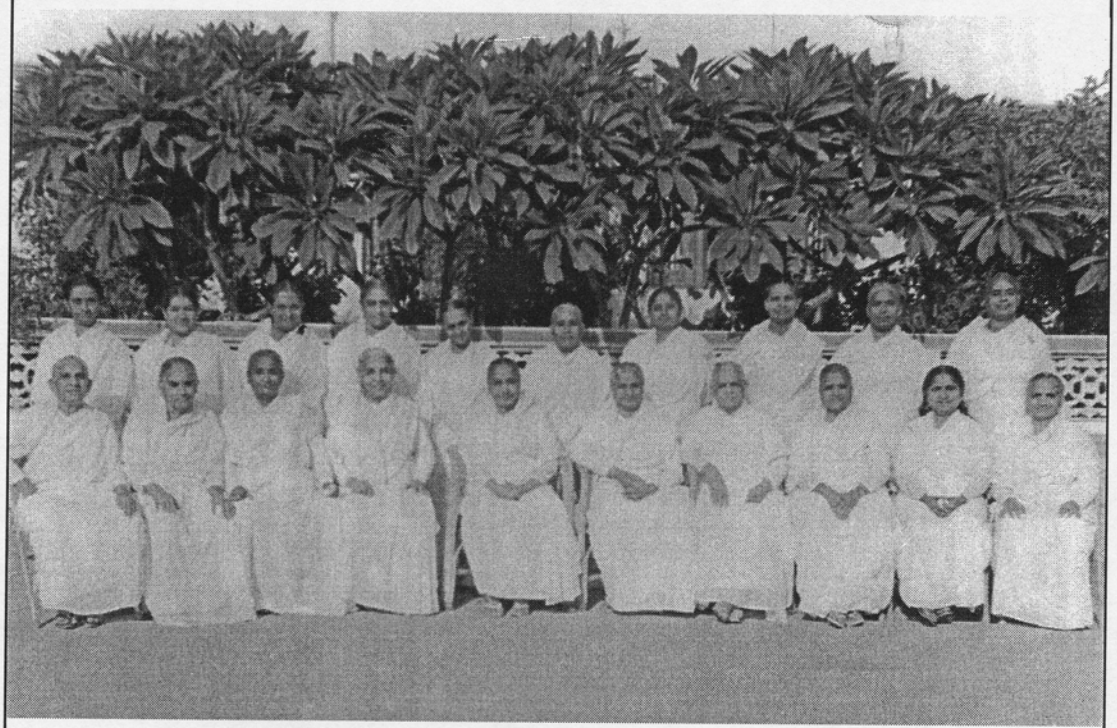

शिव शक्ति भारत मातायें—

(बायें से दायें) पहली पंक्ति में : ध्यानी दादी, कमल सुन्दरी दादी, आलराउण्डर दादी, निर्मलशान्ता दादी, दीदी मनमोहिनी, प्रकाशमणि दादी, बृजइन्द्रा दादी, पुष्पशान्ता दादी, जानकी दादी तथा सन्तरी दादी।

~~दूसरी पंक्ति~~ (पीछे की पंक्ति में) : ईशू दादी, शान्तामणि दादी, सन्देशी दादी, गुल्ज़ार दादी, रतनमोहिनी दादी, गंगे दादी, बृजशान्ता दादी, मीट्ठू दादी, मनोहर दादी तथा चन्द्रमणि दादी।